अप्रैल (प्रथम) 2020 | ₹30.00

चंपक

सब्सक्राइब करने के लिए 8588843437 पर मैसेज भेजें.
या देखें delhipress.in
अगला 'ई एडिशन फ्री' पाने के लिए ऊपरी नंबर पर मैसेज भेजें.

स्टोमाफिट®

टैबलेट व लिक्विड

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

रखे स्टमक फिट...
पेट फिट...आप फिट

बिस्मथ है कारगर

एच. पायलोरी, पैप्टिक अल्सर या पेट से जुड़ी अन्य समस्याओं के लिए बाजार में मौजूद ऐंटीबायोटिक दवाएं और ऐंटासिड कुछ समय के लिए राहत तो देते हैं मगर समस्या जस की तस रहती है. स्टोमाफिट में मौजूद बिस्मथ विकार को बढ़ने से रोकने के साथसाथ उस का निदान भी करता है. इसके प्रयोग के बाद धीरेधीरे पाचन क्रिया भी सुचारु रूप से काम करने लगती है.

आस्ट्रेलिया के डॉ. बेरी जे. मार्शल को बिस्मथ के इस्तेमाल से एच. पायलोरी को जड़ से मिटाने में सफल होने की वजह से 2005 का मेडिसन में नोबल पुरस्कार मिला.

फायदा पहली खुराक से ही

2 चम्मच/2 टैबलेट दिन में 3 बार खाने के बाद आधा कप पानी के साथ 4 हफ्तो तक

अपच गैस एसिडिटी से छुटकारा

100ml. 200ml. 450ml में उपलब्ध

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन : 8447977889/999, 011-46108735, मेल : info@stomafit.com

फ्री होम डिलीवरी 8447977999

चंपक

अंक : 1186

संस्थापक
विश्वनाथ
1917–2002

सुनो कहानी

महाराजा की फैशन परेड	4
अप्रैल फूल	10
किट्टू का बेकार आइडिया	14
शेर और अफलातून	18
परी के कपकेक्स	28
बिना पंखों की उड़ान	35
मत भाग दीपू	42
छुआछूत का दंश	47

मुखपृष्ठ

मिकी चूहा बैडी लोमड़ी को बेवकूफ बना रहा है. क्या कभी आप ने भी अपने दोस्तों को बेवकूफ बनाने की कोशिश की?

मन बहलाओ

देखो हंस न देना	8
रास्ता बताओ	9
सुंदर रंग भरो	12
बताओ तो जानें	26
बिंदु मिलाओ	27
चित्र पूरा करें	31
स्मार्ट	32
गिनो और लिखो	34
अंतर बताओ	45
सुलझाएं	46

चित्र कथाएं

डमरू और बटरमिल्क	13
चीकू	24
दादाजी और राष्ट्रीय पालतू पशु दिवस	38

विशेष पृष्ठ

चंपक क्रिएटिव चाइल्ड इवेंट	22
मजेदार विज्ञान	17
नन्ही कलम से	40

संपादक व प्रकाशक ● परेश नाथ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा -121003 से मुद्रित. संपादक - परेश नाथ.
Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.

चंपक में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजना आवश्यक हैं अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं की सुरक्षा/वापसी के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है. वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. एक प्रति रु. 30.00 (बिना सीडी के),
वार्षिक रु. 576, दो वर्ष रु. 1050. (भारत में)

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें:
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 91-11-41398888, एक्स. नं. 119, 221, 264.
टौल फ्री नं. 18001038880(सोम. से शनि सुबह 10बजे से शाम के 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप: 08588843408
ईमेल: subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, वडाला उद्योग भवन, नैगांव क्रौस रोड, वडाला मुंबई-400031. फोन : 91-22-24122661, 43473050.

- रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
- निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
- संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress. biz
- ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा क्राफ्ट्स यहां भी भेज सकते हैं :
writetochampak@delhipress.in या एसएमएस करें : 09619587613
www. facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/ user/ ChampakSciQ

महाराजा की फैशन परेड

कहानी ● कुमुद कुमार

चंपकवन के महाराजा शेरसिंह हरफनमौला थे. उन्हें अजबगजब कपड़े पहनने का बड़ा शौक था.

इस बार महाराजा ने अपने लिए शाही दरजी जग्गू लकड़बग्घे से नेहरू जैकट और शेरवानी सिलवाई. इस परिधान में सजधज कर जब वह दरबार में जाने लगे तो महारानी शेरनी ने कहा, ''अजी, जरा रुकिए, अपनी जैकट में जरा यह गुलाब का फूल तो लगा लीजिए. तभी तो आप जवाहरलाल नेहरू जैसे दिखेंगे. बच्चों के प्यारे चाचा नेहरू.''

यह सुन कर महाराजा शेरसिंह बड़े खुश हुए. आखिर उन की तुलना इतनी बड़ी हस्ती से जो कर दी गई थी.

महारानी शेरनी से जैकट पर गुलाब का फूल लगवा

कर महाराजा शेरसिंह दरबार में पहुंचे तो चापलूस दरबारियों ने उन्हें घेर लिया और महाराजा के कपड़ों की जम कर तारीफ करने लगे.

‘‘महाराज, जैकट और शेरवानी में तो आप शाही परिधान से भी ज्यादा खूबसूरत लग रहे हैं,’’ एक चापलूस ने कहा.

‘‘महाराज, आप से स्मार्ट जानवर इस धरती पर नहीं मिलेगा,’’ दूसरा चापलूस बोला.

सभी चापलूस महाराजा की चापलूसी में लगे हुए थे. तीसरे चापलूस ने महाराजा के दिल की बात कह दी. ‘‘महाराज, चंपकवन की फैशन परेड में यदि आप इन कपड़ों में हिस्सा ले लें तो दुनिया में आप को हराने वाला कोई नहीं होगा,’’ एक ने कहा.

चापलूसी भरी बातें सुन कर महाराजा का दिमाग सातवें आसमान पर पहुंच गया. उन को लगा कि वास्तव में उन से खूबसूरत और स्मार्ट इस दुनिया में कोई और है ही नहीं. उन्होंने फैशन परेड में भाग लेने की ठान ली.

जब प्रधानमंत्री चतुर सियार को यह पता चला तो वह दौड़ादौड़ा महाराजा के पास पहुंचा. उस ने कहा, ‘‘महाराजा, आप चंपकवन के राजा हैं. आप का काम फैशन परेड में भाग लेना नहीं, बल्कि चंपकवनवासियों की सेवा करना है.’’

लेकिन शेरसिंह पर तो फैशन परेड में हिस्सा लेने का भूत सवार था.

उन्होंने चतुर सियार को डपटते हुए कहा, ‘‘महामंत्री, जब तुम से सलाह मांगी जाए, तब सलाह दिया करो. फालतू की सलाह देने की जरूरत नहीं है.’’

बेचारा महामंत्री सियार अपना सा मुंह ले कर रह गया, जबकि महाराजा ने फैशन परेड में भाग लेने की तैयारी और तेज कर दी.

फैशन परेड के आयोजक जौनी जेब्रा को जब पता चला कि महाराजा फैशन परेड में भाग ले रहे हैं, तो उस के हाथपांव फूल गए. उधर, फैशन परेड के जज मिंटू, पिंटू और चिंटू चूहे के भी यह सुन कर होश उड़ गए. महाराज को कौन समझाए कि उन्हें इस में भाग नहीं लेना चाहिए? किसी के पास इस का उत्तर नहीं था.

आखिर फैशन परेड का दिन भी आ ही गया. जंगल में हर कोई यह जान कर कि महाराज भी परेड में हिस्सा ले रहे हैं वहां उत्सुकतावश भारी भीड़ फैशन परेड देखने के लिए जमा हो चुकी थी. निर्णायकमंडल के सदस्य मंच पर अपनीअपनी सीट पर बैठ चुके थे. रंगबिरंगे और अजीबोगरीब परिधानों में प्रतिभागी रैंप पर चल कर अपने हुनर का प्रदर्शन करने लगे.

महाराजा शेरसिंह को अपनी बारी का बेसब्री से इंतजार था. वह परेड में हुनर दिखाने के लिए उतावले हो रहे थे, लेकिन आयोजकमंडल ने उन का नाम सूची में सब से आखिर में लिख रखा था. वे महाराजा के गुस्से और खौफ से भलीभांति परिचित थे.

आखिर महाराजा शेरसिंह का नाम जैसे ही मंच से अनाउंस हुआ, दर्शक शांत हो गए और रैंप पर महाराजा पर उन की नजरें टिक गईं. जौनी जेब्रा के दिल की धड़कनें कुछ ज्यादा ही बढ़ गईं.

निर्णायकमंडल के सदस्यों मिंटू, पिंटू और चिंटू की सांसें डर के मारे थम सी गई थीं. उन के चेहरों पर खौफ साफ दिख रहा था. यदि महाराजा विजयी घोषित नहीं हुए तब क्या होगा? उन को यही चिंता सता रही थी.

शेरसिंह नेहरू जैकट और शेरवानी पहन कर रैंप पर उतरे. पूरा सभागार उन के आते ही तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा.

महाराजा इठलाते हुए रैंप पर चलने लगे, लेकिन यह क्या? महाराजा शेरसिंह अभी कुछ की कदम चले थे कि उन का संतुलन बिगड़ा और वे लड़खड़ा कर मंच पर गिर पड़े. उन के इस तरह गिरने से सब को हंसी आ गई.

शेरसिंह गुस्से में भन्नाए और उठ कर हंसने वालों पर बड़े जोर से दहाड़े उन की दहाड़ से घबरा कर मिंटू, पिंटू और चिंटू अपनी कुर्सियों समेत मंच से नीचे गिर पड़े. इस से एक बार मंच पर फिर से हास्यास्पद दृश्य उत्पन्न हो गया.

यह दृश्य देख कर महाराजा के चेहरे पर भी मुसकान आ गई. उन का गुस्सा दूर हो गया.

मिंटू, पिंटू और चिंटू को फिर से मंच पर लाया गया और उन से विजयी प्रतिभागियों के नाम बताने को कहा गया. उन्होंने विजेताओं की सूची आयोजक जौनी जेब्रा को थमा दी और बहाना बना कर वहां से नौ दो ग्यारह हो गए.

आयोजकों ने विजेताओं के नाम माइक पर घोषित किए, लेकिन महाराजा शेरसिंह कोई स्थान प्राप्त न कर सके थे. मिंटू, पिंटू और चिंटू ने बिना किसी भेदभाव के प्रतियोगिता का निर्णय किया था.

सब को यकीन था कि महाराजा सूची में अपना नाम न पा कर गुस्सा होंगे, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ.

आयोजकों की अनुमति ले कर महाराजा ने कहा, ‘‘चंपकवनवासियो, मुझ से बड़ी भूल हुई, जो मैं ने इस फैशन परेड में हिस्सा लिया. मेरा काम तो राज्य चलाना है न कि परेड में शामिल लेना.’’

फिर महाराजा इधरउधर देख कर बोले, ‘‘मुझे गर्व है मिंटू, पिंटू और चिंटू चूहे पर जिन्होंने बिना डरे निष्पक्ष भाव से फैसला किया. वे अवश्य सम्मान के पात्र हैं. मैं ने उन्हें सम्मानित करने और राजदरबार में स्थान देने का निर्णय किया है, लेकिन वे हैं कहां?’’

अब सब की नजरें इधरउधर दौड़ने लगीं. लेकिन मिंटू, पिंटू और चिंटू चूहे का कहीं कोई अतापता नहीं था. सब उन्हें तलाशने में लग गए. तभी कालू बिल्ले को मंच के नीचे उन की गंध मिल गई. फिर तीनों चूहों को मंच पर लाया गया, वे अब भी डरे हुए थे. ‘‘मिंटू, पिंटू और चिंटू तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है. मैं तुम्हारा फैसला सुन कर बेहद खुश हूं कि तुम ने अपना निर्णय सुनाते समय कोई भेदभाव नहीं किया. सभी प्रतिभागियों को एक जैसा समझा, चाहे उन में तुम्हारा राजा था या कोई और लोग. अच्छा न्याय यही और ऐसे ही होता है.’’

यह सुन कर मिंटू, पिंटू और चिंटू एकदूसरे का चेहरा देखने लगे. उन का डर गायब हो चुका था. उन के चेहरे मुसकरा पड़े. महाराजा शेरसिंह ने उन्हें मालाएं पहना कर सम्मानित किया. सभागार एक बार फिर से तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा. ●

देखो हंस न देना

टीचर (छात्र से) : तुम्हारे पापा क्या करते हैं?
छात्र : वे एचडीएफसी के मालिक हैं.
टीचर : वाउ, बहुत अच्छे. एचडीएफसी बैंक?
छात्र : नहीं, मैम, हीरालाल ढोकला ऐंड फारसन सैंटर.

एम एस वैकुंठ, 8 वर्ष
चैन्नई

टीचर (पेरैंट्स से) : आप का बेटा हमेशा स्कूल लेट क्यों आता है?
पेरैंट्स : लेकिन उस की शिकायत तो हमेशा यही रहती है कि आप पहले आ जाती हैं.

साव्या ठाकुर, 10 वर्ष
उत्तराखंड

पिया (भक्ति से) : साल का सब से छोटा महीना कौन सा है?
भक्ति : फरवरी,
पिया : गलत.
भक्ति : कैसे?
पिया : यह मई है, क्योंकि इस में सिर्फ 2 अक्षर हैं 'म' और 'ई'.

पिया जोशी, 8 वर्ष
नई दिल्ली

सुमन (अमन से) : 'बी' को ठंडापन क्यों महसूस होता है?
अमन : क्योंकि वह 'ए' और 'सी' के बीच में है.

आशिता ठाकुर, 9 वर्ष,
पटना.

हाहाहा हाहाहा हीहीहीं हीहीहीं

चिंटू (सीटू से) : चूहा तब कहां जाएगा जब उस की टेल (पूंछ) कट जाएगी?
सीटू : रिटेल शौप पर.

जेनित संघवि, 11 वर्ष, मुंबई

टीचर (जोय से) : रूस कहां है?
जोय : मुझे नहीं पता, मैम.
टीचर : बेंच पर खड़े हो जाओ.
(जोय बेंच पर खड़ा हो गया. कुछ देर बाद)
जोय : मैम, मुझे अभी भी रूस दिखाई नहीं दे रहा है.

किशन राठौर, 9 वर्ष
बैंगलुरु

बंटी (संटी से) : ड्रैकुला एक गलत ताबूत में क्यों पड़ा रहता है
संटी : क्योंकि उस ने गलती से एक कब्र खोद दी.

साक्षी एम सेठी, 12 वर्ष
हरियाणा

बबलू (बिट्टू से) : तुम्हें पता है, मेरे दादाजी की आयु कितनी है?
बिट्टू : नहीं, मैं कैसे जानूं?
बबलू : सिर्फ 8 साल.
बिट्टू : आयं, यह कैसे हो सकता है. 8 साल के तो तुम हो.

बबलू : हां भई, मैं 8 साल पहले जन्मा, तभी तो वे दादाजी बने.

विवेक वर्धन, 10 वर्ष, दिल्ली

सीटू (बंटी से) : भाई, आज तो गजब हो गया.
बंटी : क्या गजब हुआ? लौटरी लग गई क्या?
सीटू : अरे, नहीं यार, मैं बस में सीट पर बैठा था. तभी एक स्टौप पर एक आदमी चढ़ा और उस ने अपने फोन पर राष्ट्रगान चला दिया.
बंटी : फिर ?
सीटू : फिर क्या, राष्ट्रगान सुनते ही मैं खड़ा हो गया और वह मेरी सीट पर झट से बैठ गया.

अश्विनी कुमार, 12 वर्ष
मंडावली, दिल्ली

सोनू (वैटर से) : सुनो, मेरी चाय में मच्छर गिरा हुआ है.
वैटर : टेंशन न लो सर, उस का पेट पहले से ही भरा हुआ है. ज्यादा चाय नहीं पिएगा.

रितुराज, 4 वर्ष
डंगवा पोसी, चाईबासा

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:
चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031
ईमल : **writetochampak@delhipress.in**
और **SMS: 9619587613**
औनलाइन विजिट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine
https://www.youtube.com/ChampakSciQ

रास्ता बताओ

11 अप्रैल को राष्ट्रीय पालतू पशु दिवस है.
पालतू कुत्ते को ढूंढ़ने में रीमा की मदद कीजिए.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

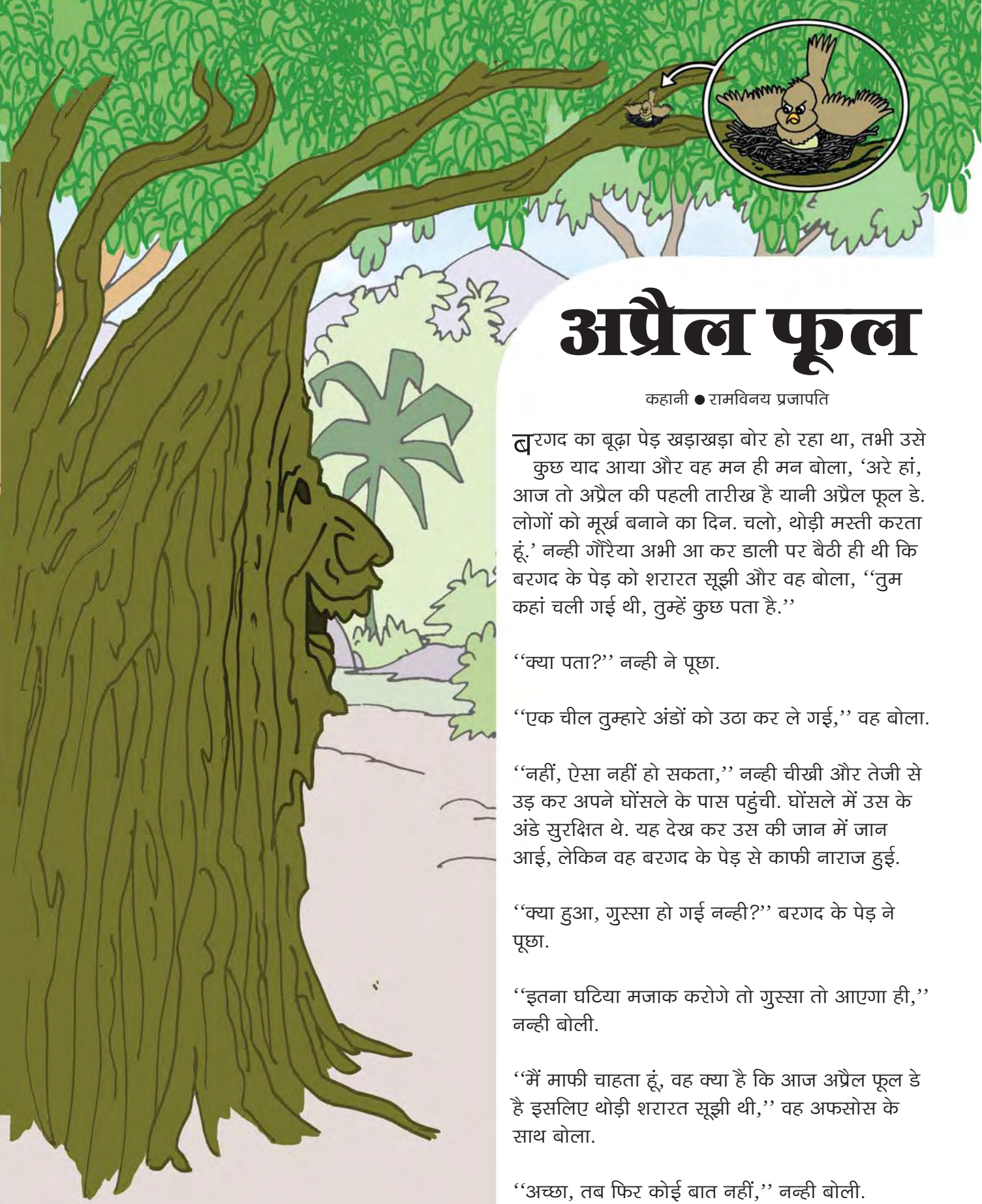

अप्रैल फूल

कहानी ● रामविनय प्रजापति

बरगद का बूढ़ा पेड़ खड़ाखड़ा बोर हो रहा था, तभी उसे कुछ याद आया और वह मन ही मन बोला, 'अरे हां, आज तो अप्रैल की पहली तारीख है यानी अप्रैल फूल डे. लोगों को मूर्ख बनाने का दिन. चलो, थोड़ी मस्ती करता हूं.' नन्ही गौरैया अभी आ कर डाली पर बैठी ही थी कि बरगद के पेड़ को शरारत सूझी और वह बोला, ''तुम कहां चली गई थी, तुम्हें कुछ पता है.''

''क्या पता?'' नन्ही ने पूछा.

''एक चील तुम्हारे अंडों को उठा कर ले गई,'' वह बोला.

''नहीं, ऐसा नहीं हो सकता,'' नन्ही चीखी और तेजी से उड़ कर अपने घोंसले के पास पहुंची. घोंसले में उस के अंडे सुरक्षित थे. यह देख कर उस की जान में जान आई, लेकिन वह बरगद के पेड़ से काफी नाराज हुई.

''क्या हुआ, गुस्सा हो गई नन्ही?'' बरगद के पेड़ ने पूछा.

''इतना घटिया मजाक करोगे तो गुस्सा तो आएगा ही,'' नन्ही बोली.

''मैं माफी चाहता हूं, वह क्या है कि आज अप्रैल फूल डे है इसलिए थोड़ी शरारत सूझी थी,'' वह अफसोस के साथ बोला.

''अच्छा, तब फिर कोई बात नहीं,'' नन्ही बोली.

''वह देखो, जंपी बंदर आ रहा है. चलो, थोड़ी मस्ती उस के साथ भी करते हैं,'' बरगद के पेड़ ने कहा.

''हां, बहुत मजा आएगा,'' नन्ही बोली.

''रुक जाओ जंपी, पेड़ पर मत चढ़ो, अभी कुछ देर पहले शिकारी आए थे और तुम्हें फंसाने के लिए पेड़ पर जाल बिछा कर गए हैं,'' वह बोला.

''पेड़ पर कौन चढ़ रहा है, मैं तो तुम्हें बताने आया हूं कि अभी थोड़ी देर में तुम्हें काटने के लिए कुछ लोग आ रहे हैं,'' जंपी बोला.

''क्या, कुछ लोग मुझे काटने आ रहे हैं,'' बरगद के पेड़ की बोलती बंद हो गई, लेकिन अगले ही पल उस ने कहा, ''अच्छा, तुम समझ गए कि मैं तुम्हें मूर्ख बना रहा हूं इसलिए तुम भी मुझे मूर्ख बना रहे हो न.''

''नहीं, नहीं, मैं तुम्हें कोई मूर्ख नहीं बना रहा,'' जंपी जोर दे कर बोला, ''वह देखो, आ गए पेड़ काटने वाले.''

बरगद के पेड़ ने देखा तो बहुत सारे लोग उस की तरफ बढ़े चले आ रहे थे, उन में से एक के हाथ में पेड़ काटने की इलैक्ट्रिक आरी थी. नजदीक आते ही उस व्यक्ति ने कहा, ''देखो भाइयो, इस आरी से कैसे यह पुराना बरगद का पेड़ पल भर में कट कर नीचे गिर जाएगा. दोस्तो, आप लोग थोड़ी दूरी पर खड़े हो कर इस जादू को देखिए.''

बरगद के पेड़ को तो जैसे सांप सूंघ गया. वह मन ही मन सोचने लगा, 'अरे, कैसे लोग हैं ये सब, यह आदमी मुझे काटने जा रहा है और इसे कोई रोक भी नहीं रहा.'

उस आदमी ने आरी को बरगद के पेड़ के ऊपर रख दिया. तभी भीड़ में से एक आदमी ने आगे बढ़ कर कहा, ''रुक जाइए, आप इस पेड़ को नहीं काट सकते.''

''क्यों, मैं इसे क्यों नहीं काट सकता?'' उस ने पूछा.

''पेड़ हमारे जीवन का अस्तित्व होते हैं, पेड़ों के बिना धरती पर जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती. यदि पेड़ नहीं होंगे तो पर्यावरण का संतुलन बिगड़ जाएगा और चारों ओर तबाही मच जाएगी. पेड़ हमारे सब से घनिष्ठ मित्र होते हैं,'' उस व्यक्ति के इतना कहते ही सब तालियां बजाने लगे.

पेड़ काटने वाले व्यक्ति ने अब अपनी आरी जमीन पर रख दी और बोला, ''दोस्तो, हम अब कोई पेड़ नहीं काटेंगे. हम नुक्कड़ नाटक करने वाले लोग हैं . आप लोगों को पेड़पौधों के बारे में जागरूक करने आए हैं. हम पेड़ों को बचाना तो चाहते हैं पर उतना प्रयास नहीं कर पा रहे हैं जितना जरूरी है. हमें चाहिए कि हमारे आसपास जितनी भी खाली जमीन है वहां हम पौधारोपण करें.

''यदि यह छोटा सा कदम हर व्यक्ति उठाएगा तो धरती और धरती का सारा जीवन खुशहाल हो जाएगा. हम वादा करते हैं कि इस धरती को पेड़पौधों से हराभरा बना देंगे,'' सब एकसाथ बोल उठे.

''हां, यह हुई न बात. अच्छा, हमें माफ करना. हम ने आप लोगों को थोड़ा मूर्ख बनाया, क्योंकि आज अप्रैल फूल डे है,'' वह कलाकार बोला. इतना सुनते ही लोग हंस पड़े और बगरद की जान में जान आ गई. वे सब जोरजोर से झूमते हुए बोले, ''अप्रैल फूल, अप्रैल फूल.'' ●

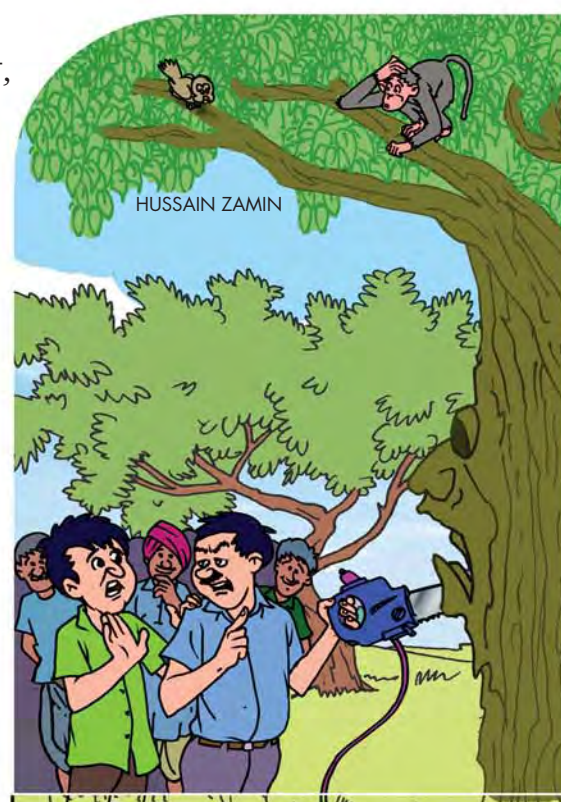

सुंदर रंग भरो

डमरू और बटरमिल्क

कहानी ● शिवेश श्रीवास्तव

जियान ऊंट की डेयरी पर डमरू ने काम करना शुरू किया.

डमरू, स्टोररूम में दूध, दही, बटर और श्रीखंड सही तरीके से सजा कर रखो, ग्राहक जल्दी आना शुरू कर देंगे.

जी, मालिक.

डमरू, कुछ और बटरमिल्क तैयार कर लेना. गर्मियों में इस की बहुत मांग रहती है, क्योंकि यह ठंडा और ताजा होता है.

अब यह बटरमिल्क क्या है?

हम्म... मेरे खयाल से इसे ऐसे बनाया जाता है.

कुछ देर बाद....

डमरू, क्या तुम ने बटरमिल्क बना लिया है? हमें रीना लोमड़ी की शादी में इस की बड़ी मात्रा में डिलीवरी देनी है.

मालिक, डमरू ने तो दुकान में रखे दूध के सभी डब्बों में बटर मिला दिया है.

क्या, तुम से किस ने कहा कि सारा बटर दूध के डब्बों में मिला दो?

मालिक, आप ही ने तो मुझे बटरमिल्क बनाने के लिए कहा था. इसलिए मैं ने सारे दूध में बटर मिला दिया है.

बेवकूफ, बटरमिल्क नमकीन, खट्टा और मथा हुआ पेय है और इसे दूध में बटर मिला कर नहीं बनाया जाता. अब भाग जाओ यहां से.

ओह, तो आप को इस बारे में मुझे पहले चाहिए था.

SONAL

भाग जाओ यहां से, तुम ने महंगा बटर और कई लिटर दूध बेकार कर दिया.

यहां से तुरंत भाग जाओ. तुम ने मेरा सब कुछ बरबाद कर दिया है. मेरी दुकान हमेशा के लिए बंद हो गई है.

मालिक, अगर आप इस में अपना दिमाग लगा सकते हो तो अभी भी इस से कुछ और बना सकते हो तथा इसे बेच कर मुनाफा कमा सकते हो.

किट्टू का बेकार आइडिया

कहानी ● एस वरालक्ष्मी

किट्टू एक हाथ में सेब और दूसरे में एक बोरा पकड़े सड़क पर चला जा रहा था. रास्ते में उसे वैंकट मिला.

''सेब और बोरी के अलावा क्या है?'' वैंकट ने उत्सुकता से पूछा, ''सेब तो बड़ा अच्छा दिख रहा है. मुझे सेब पसंद है.''

किट्टू ने अपना सिर हिलाया, ''अरे, नहीं. सेब किसी और के लिए है.''

''किस के लिए?''

''अच्छा, अगर तुम जानना ही चाहते हो तो सुनो, यह उस बूढ़ी महिला के लिए है, जो सड़क के आखिर में रहती है.''

''वह चिड़चिड़ी तुनक मिजाज बूढ़ी औरत? वह तुम्हारा दिमाग खा जाएगी,'' वैंकट ने उसे चेताया.

''अरे नहीं, वह ऐसा नहीं करेगी,'' किट्टू ने दृढ़ता से कहा.

''तुम बिना किसी वजह के कोई चीज कभी नहीं देते हो. तुम उसे सेब क्यों दे रहे हो? तुम्हारा जरूर कोई मकसद होगा,'' वैंकट ने समझदारी दिखाते हुए कहा.

किट्टू ने भोलेपन से कहा, ''तुम्हारे कहने का क्या मतलब है? मेरा कोई मकसद नहीं है.''

''मुझ से बहाने मत बनाओ. मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूं.''

किट्टू ने लंबी सांस ली और कहा, ''ओके, तुम ठीक कह रहे हो. उस महिला का उस के बगीचे में आम का एक पेड़ है. उस पर लगे आम स्वादिष्ठ और बहुत अच्छे हैं. मैं ने चखे भी हैं. उसे सेब पसंद हैं और मुझे आम पसंद हैं. इसलिए मैं ने सोचा कि उसे

सेब दूंगा तो वह खुश होगी और मुझे भी कुछ आम लेने देगी, इसी वजह से मैं इस बोरे को भी उस के लिए ले जा रहा हूं.''

वैंकट की आंखें चमकने लगीं. ''मैं ने भी यही सोचा था. तुम बिना किसी मतलब के कुछ कर ही नहीं सकते. खैर, तुम इतने भारी बोरे को ढो नहीं सकते. मैं भी आता हूं, तुम्हारी मदद करूंगा.''

उस से सहमत होते हुए किट्टू ने कहा, ''और मैं साफसाफ कहता हूं कि तुम अपनी इस मदद के लिए कुछ आम पाना चाहोगे.''

वैंकट ने खीसें निपोरी और कहा, ''हां, अगर तुम इनाम देना चाहते तो मैं कौन होता हूं मना करने वाला?''

किट्टू ने उसे नाखुशी से देखा, लेकिन उसे यह भी एहसास हो गया कि वह अकेले उस बोरे को नहीं ढो पाएगा, इसलिए उस ने अधूरे मन से अपनी सहमति दे दी.

वे दोनों उस बूढ़ी महिला के घर की तरफ चल पड़े. जब वे उस के घर के पास पहुंचे तो देखा, वह बूढ़ी महिला बाहर खड़ी जोर से उन बच्चों पर चीखचिल्ला रही थी, जो उस के आम चुरा रहे थे. वह अपने हाथ डरावने ढंग से नचा रही थी.

सब बच्चे भाग गए थे, जबकि वह अपनी उखड़ती सांस के बावजूद चीखे जा रही थी.

किट्टू और वैंकट वहां आ कर शांत हो गए और घबरा कर एकदूसरे को देखने लगे. अब वे दोनों भी थोड़ा डरे हुए थे.

किट्टू ने खुद को संभाला और बहुत ही धीमे स्वर में बोला, ''मैं समझता हूं कि हम जैसे बच्चे उस के लिए एक अपवाद होंगे.''

वैंकट ने उसे हलकी सी कोहनी मारी और फुसफुसाते हुए कहा, ''सब से बढ़िया यही रहेगा कि और ज्यादा देर हो जाए, हम अपना विचार त्याग कर यहां से वापस चलें.''

किट्टू हिचकिचाया, वह भी डरा हुआ था. लेकिन उन स्वादिष्ठ आमों का मोह वह छोड़ नहीं पा रहा था. उस के पास हाथ और बोरे में सेब भी थे, जो निश्चित रूप से उसे ही उस बूढ़ी महिला की नजरों में अच्छा दिखा सकते थे.

''नहीं, मेरे साथ आओ. यह मत भूलो कि मेरे पास सेब हैं.''

वैंकट हिचकिचाया और सोचने लगा, 'क्या होगा, अगर किट्टू सही साबित हुआ और उसे ढेर सारे आम भेंट कर दिए गए? अगर वह आमों के बोरे को ढोने में किट्टू की मदद नहीं करेगा तो यह पक्का है कि किट्टू उसे एक भी आम नहीं देगा. वह जानता था कि किट्टू उदारता दिखाने के लिए कोई उपहार नहीं देता है.' इसलिए वह मान गया.

दोनों निडरता के साथ बूढ़ी महिला के पास गए और उस के सामने खड़े हो गए.

वह उन की ओर मुड़ी और उन्हें देखने लगी. जब वह उन्हें देख कर चीखी तो उस की त्योरियां चढ़ गईं, ''तुम क्या चाहते हो? मैं तुम्हारे साथ आमों की शर्त लगाऊं?'' दोनों काफी घबरा गए.

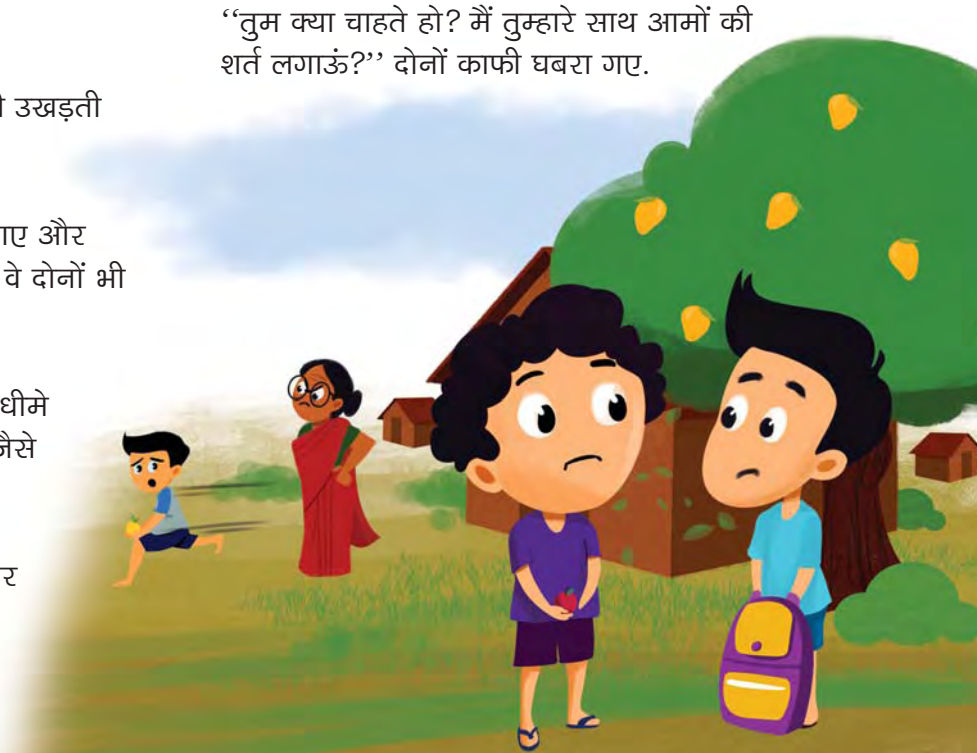

किट्टू अपने चेहरे पर एक नकली मुसकान लाया और उस ने सेब उस की ओर बढ़ा दिए.

उस ने कहा, ‘‘यह आप के लिए है.’’

बूढ़ी महिला ने संदेह से सेब को देखा और पूछा, ‘‘मेरे लिए? बिना किसी कारण के तुम मेरे लिए सेब क्यों ले आए? यह कोई मजाक है क्या? तुम क्या सोचते हो, सेब देख कर मैं खुश हो जाऊंगी और तुम्हें आम दे दूंगी? अब तुम दोनों यहां से भाग जाओ,’’ वह चिल्ला उठी.

किट्टू ने नम्रता से कहा, ‘‘नहीं, आंटी, यह आप के लिए उपहार है. यह मजाक नहीं है. एक अच्छी और सी आंटी के लिए ये मीठे सेब हैं.’’

वैंकट ने सोचा, ‘वाउ, किट्टू को उस की इस स्मार्ट बातचीत के लिए जरूर क्रैडिट मिलना चाहिए.’

बूढ़ी महिला की त्योरियां चढ़ी हुई थीं. लेकिन जब उस ने सेब देखा तो उस का गुस्सा शांत हो गया. वह अब मुसकरा उठी. उस ने कहा, ‘‘सेब बहुत प्यारा है, लड़के.’’

उस ने उस से सेब लिया और देखने लगी. उसे सेब बहुत पसंद था, इसलिए वह बिना समय गंवाए सेब खाने लगी. अगले ही पल उस ने उसे मुंह से बाहर फेंक दिया.

वह चिल्लाई, ‘‘थू, सड़ा सेब, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?’’

उस ने सेब जमीन में फेंक दिया और धमकते हुए उन की ओर बढ़ी.

किट्टू और वैंकट अपनी खाली बोरी को उठा कर से नौ दो ग्यारह हो गए. वह बूढ़ी महिला उन के पीछे दौड़ रही थी.

दौड़तेदौड़ते उखड़ती सांस के साथ वैंकट ने कहा, ‘‘तुम और तुम्हारा आइडिया, बिलकुल बकवास रहा.’’

किट्टू बोला, ‘‘सेब सड़ा हुआ था, यह मुझे कैसे पता चलता? इसे मैं ने अपनी टैरिस में कुछ दिन पहले पाया था. मुझे लगता है कि मेरी मम्मी ने इसे जरूर बाहर फेंका होगा.’’

घबराया वैंकट किट्टू पर भड़क गया, ‘‘यह बात तुम मुझे अब बता रहे हो.’’

मजेदार विज्ञान

अलगअलग तापमान में रंग का घुलना

आइए, जानते हैं कि अलगअलग तापमान में रंग का प्रसारण यानी फैलाव कैसे होता है?

आप को चाहिए :

- फूडकलर की 2 बोतलें
- एक गिलास गरम पानी से भरा
- एक दूसरा गिलास ठंडे पानी से भरा

ऐसा करें :

हम रैड और ब्लू फूड कलर लेंगे और इन की 1-1 या 2-2 बूंदें एक ही समय में दोनों गिलासों में आराम से डालेंगे.

देखें :

जब हम एक बार बूंदें गिलासों में डालेंगे तो देखेंगे कि रैड फूड कलर जिसे गरम पानी के गिलास में डाला था, वह तेजी से घुलता है जबकि नीला कलर जिसे ठंडे पानी में डाला था, घुलने में समय ले रहा है.

सोचें :

गरम पानी में फूडकलर तेजी से क्यों घुलता है?

प्रसार यानी फैलाव एक प्रक्रिया है, जिस में वस्तुओं के कण अधिक गाढ़ेपन वाले भाग से कम गाढ़ेपन वाले भाग में फैलने लगते हैं. ऐसा तब तक होता है, जब तक कि पूरे भाग में समान रूप से कण फैल नहीं जाते. फैलाव को प्रभावित करने वाला सब से प्रमुख कारण तापमान है. पानी को ज्यादा गरम करने से फूड ड्रौप्स और अधिक गतिमान होते हैं तथा फैल जाते हैं, जो इस में मौजूद होते हैं.

हम अपने इस प्रयोग में जब रैड फूड कलर की 2 बूंदें गरम पानी में डालते हैं तो रैड कलर गरम पानी में तुरंत घुल जाता है, क्योंकि गरम पानी के अणु तेजी से चलते हैं और लिक्विड में फूड कलर तेजी से टूट कर बिखरने लगता है. ठंडे पानी में गतिज ऊर्जा कम रहती है, क्योंकि पानी के अणु जमे हुए रहते हैं. यही कारण है कि ब्लू कलर वाले फूड कलर को फैलने में काफी समय लगता है.

पता करें :

परफ्यूम की खुशबू लंबे समय तक कैसे टिकी रहती है?

needpix.com

परफ्यूम बहुत ही गाढ़ा तरल पदार्थ है. जब हम किसी स्थान या वस्तु पर परफ्यूम को स्प्रे करते हैं, तो इस का अणु उस जगह या वस्तु पर गाढ़े रूप में मौजूद रहता है. ये अणु हवा के अणु के साथ मिल जाते हैं और उस के बाद पूरे कमरे में फैलने लगते हैं. यहां पर वही प्रक्रिया जारी रहती है यानी सघन स्थान से विरल स्थान की ओर फैलना. ऐसा तब तक जारी रहता है, जब तक परफ्यूम के अणु पूरे कमरे में फैल नहीं जाते. इसी कारण हम परफ्यूम की खुशबू को सूंघ पाते हैं, हम इसे स्प्रे किए जाने के बाद भी लंबे समय तक सूंघते हैं.

शेर और अफलातून

कहानी ● हरीश भंडारी

सुदूर पहाड़ियों के बीच एक खूबसूरत देवदार का जंगल था. पहाड़ी के पीछे एक खूंखार शेरू शेर रहता था. जब भी वह गुर्राता ग्रामीण उस की गरजना सुन कर कांपने लगते.

सर्दियों का समय था इसलिए कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी. सारा इलाका बर्फ से ढका हुआ था. ऐसा लगता, जैसे पूरा क्षेत्र बर्फ की सफेद चादर में लिपटा हो. अधिक बर्फ पड़ने के कारण जंगली जानवरों को भूख और ठंड से दोचार होना पड़ रहा था.

शेरू काफी दिन से भूखा था. वह अपनी भूख रोक नहीं पाया और शिकार के लिए एक गांव में घुसा और शिकार की तलाश में इधरउधर भटक रहा था.

अचानक उसे एक झोंपड़ी में टिमटिमाती मद्धम रोशनी दिखाई दी. वह दौड़ता हुआ उसी तरफ चल दिया. वह टिमटिमाते हुए एक दीए की रोशनी थी. शेरू को पूरा विश्वास था कि वहां उसे कुछ न कुछ अवश्य खाने को मिलेगा और इसी आस में वह खिड़की के नीचे दुबक कर बैठ गया.

उसे झोंपड़ी से हिरन के बच्चे की रोने की आवाज सुनाई दी. बच्चा लगातार रोए जा रहा था. शेरू के पेट में भूख से चूहे कूद रहे थे. वह खिड़की से अंदर जाने की सोच ही रहा था कि उसे अंदर से उस बच्चे की मां हिरनी की आवाज सुनाई दी, जो अपने बच्चे को डरा रही थी, ''चुप हो जा बेटा, देखो, सामने लोमड़ी आ रही है. बाप रे, यह कितनी बड़ी है? इस का मुंह कितना बड़ा है? इसे देख कर तो डर लगता है.''

लेकिन उस नन्हे से बच्चे पर मां की इन बातों का कोई असर नहीं हुआ. वह लगातार और तेज रोए जा रहा था. उस का रोना बंद ही नहीं हुआ.

मां ने फिर बच्चे को डराते हुए कहा, '' वह देखो बेटा, भालू आ गया. वह खिड़की के बाहर बैठा है. रोना बंद करो नहीं तो वह अंदर आ जाएगा. लेकिन फिर भी बच्चे का रोना बंद नहीं हुआ. मां के डराने का उस पर कोई असर नहीं हुआ.

यह सब सुन कर खिड़की के बाहर बैठा शेरू सोच रहा था, 'यह बच्चा भी बड़ा अजीब है, काश, मैं उसे देख पाता. यह न तो लोमड़ी से डरता है और न ही भालू से.'

शेरू को बहुत जोर की भूख लगी थी. अब ज्यादा देर उस

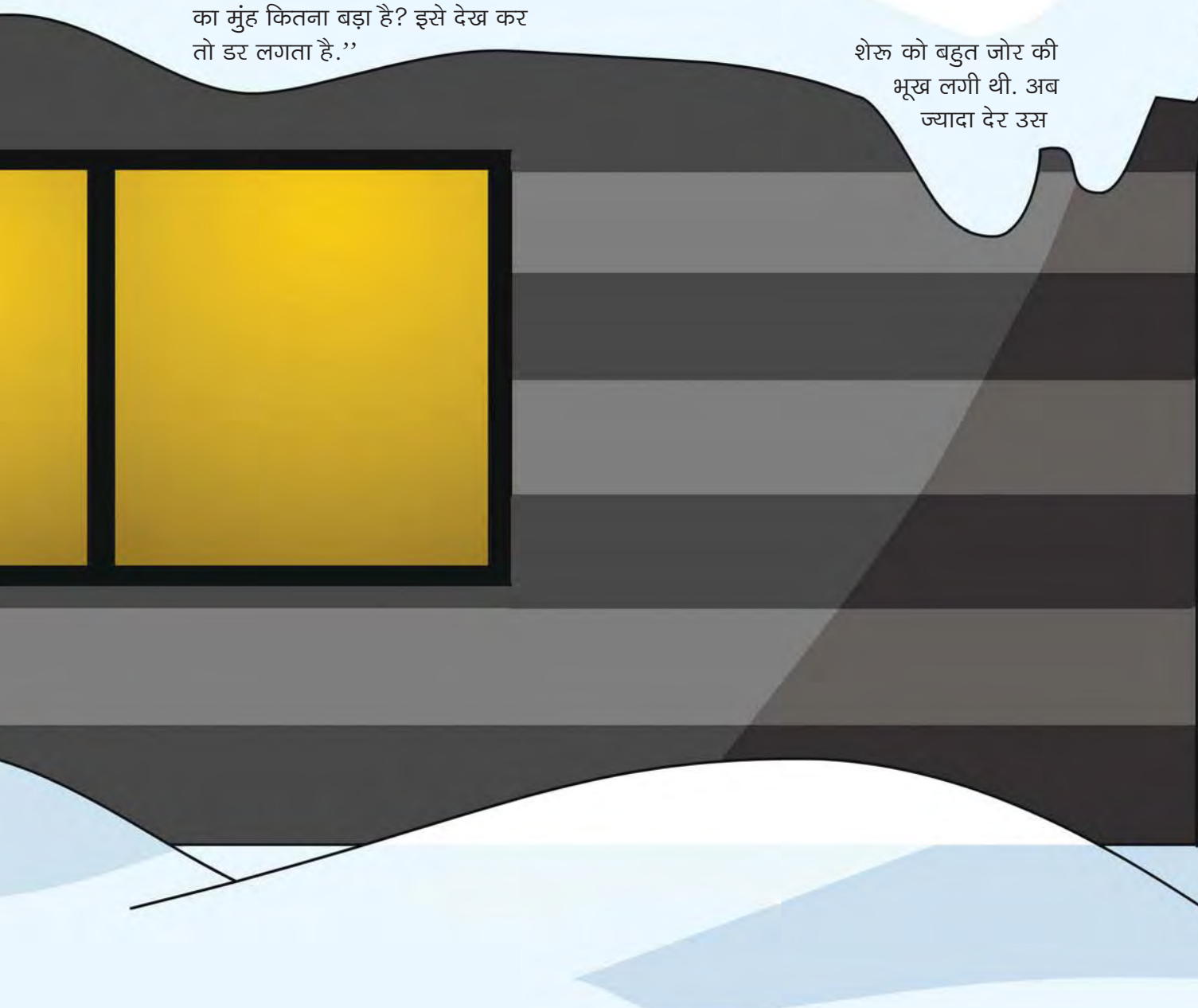

से बैठा नहीं जा रहा था. वह खड़ा हो गया. बच्चा अब भी लगातार रोए जा रहा था.

''देखो, देखो,'' अचानक हिरनी की आवाज सुनाई दी, ''देखो, सामने से शेर आ रहा है. वह रहा खिड़की के नीचे.'' लेकिन बच्चे का रोना अब भी लगातार जारी था. वह बिलकुल भी चुप नहीं हुआ.

यह सुन कर शेरू को बड़ा ताज्जुब हुआ.

बच्चे की बहादुरी से उस को डर लगने लगा. उसे चक्कर आने लगे और वह बेहोश हो गया. अब शेरू सोचने लगा, 'उसे कैसे मालूम कि मैं खिड़की के नीचे बैठा हूं.' उस ने खिड़की से अंदर झांका, बच्चा अभी भी रो रहा था. उसे शेरू का भी कोई डर नहीं था.

शेरू ने आज तक ऐसा कोई जीव नहीं देखा जो उस के नाम से न डरता हो. उसे यही लगता था कि दुनिया के सारे जीव उस के नाम लेने मात्र से ही डर के मारे कांपने लगते हैं, लेकिन यह बच्चा है कि इस पर मेरे नाम का कोई असर ही नहीं हो रहा है.

यह सोच कर शिकार की ताक में बैठे शेरू को बड़ा ताज्जुब हुआ. वह उस बच्चे की बहादुरी से कांपने लगा. उसे चक्कर आने लगे.

वह सोचने लगा कि यह बड़ा गजब का बच्चा है, जिसे किसी चीज का भी डर नहीं है. शेरू का भी नहीं. अब शेरू को चिंता सताने लगी. तभी हिरनी की दोबारा आवाज सुनाई दी, ''लो, अब चुप रहो, वह देखो बूहू (अफलातून),'' इतना सुनते ही बच्चे ने फौरन रोना बंद कर दिया. वहां एकदम सन्नाटा पसर गया.

शेरू ने सोचा, 'आखिर यह बूहू (अफलातून) है कौन? शायद यह काफी खूंखार होगा.' अब तो शेरू की भी बूहू का नाम सुन कर घिग्घी बंधने लगी.

वह वहां बैठा यह सोच ही रहा था कि कोई भारीभरकम सी चीज खिड़की से धम्म से उस की पीठ पर गिरी.

शेरू अपनी जान बचा कर वहां से भागा. उस ने सोचा कि उस की पीठ पर शायद वही बूहू कूद गया है.

असल में उस की पीठ पर एक चोर रिकी जिराफ कूदा था, जो छत पर बैठा चोरी की योजना बना रहा था. डरा तो चोर भी था कि वह मौत के मुंह में चला गया है.

शेरू काफी तेजी से पहाड़ी की तरफ दौड़ा ताकि चोर उस की पीठ से नीचे गिर जाए, लेकिन चोर ने भी शेरू को कस कर पकड़ा था, वह जानता था कि यदि वह नीचे गिरा तो शेरू उसे जिंदा नहीं छोड़ेगा, दूसरी तरफ शेरू को अपनी जान का डर सता रहा था.

कुछ देर बाद सुबह का हलकाहलका उजाला होने लगा. रिकी मौका पा कर शेरू की पीठ से कूद गया. शेरू की पीठ से उतर कर उस ने चैन की सांस ली.

अब शेरू भी सोचने लगा, 'अच्छा हुआ मैं बच गया वास्तव में बूहू तो पहलवान है. यह भयानक जीव है. शुक्र है मैं इस के चंगुल से बच गया. शेरू भूखाप्यासा वापस जंगल में अपनी गुफा की तरफ चला गया. ●

चंपक पत्रिका बड़े गर्व के साथ चंपक क्रिएटिव चाइल्ड कौंटैस्ट सीजन-7 का रिजल्ट घोषित कर रही है.

सीजन 7

कक्षा 5'ए' की प्रदर्शनी

क्राफ्ट एग्जिबिशन में, आप सब का स्वागत है. स्टाल से स्टाल तक. एग्जिबिशन देखने के लिए आप का बहुतबहुत स्वागत है. प्रदर्शनी शुरू हो चुकी है. विज्ञान और गणित भी प्रदर्शनी में शामिल हैं, हर तरफ रचनात्मकता है. हाथ से बने पैंसिलबौक्स देखे और सराहे जा रहे हैं. वाल हैंगिंग्स कक्षा 5 ए की विशेषता है. कक्षा 5 ए से हाथ मिलाएं. इन की बनाई खूबसूरत बोतलें आप के मस्तिष्क को झकझोर देंगी. ड्राइंग और हैंडराइटिंग एक राज को खोलेंगी. हम इस एग्जिबिशन को सफल बनाने के लिए एकसाथ हैं.

अनुषा शुक्ला, 10 वर्ष, जबलपुर

सौम्या अजित घाड़ी, 9 वर्ष
मौडल इंगलिश स्कूल (विष्णुनगर), डोंबिवली

रिया कृष्ण कुमार, 7 वर्ष
मौडल इंगलिश स्कूल (विष्णुनगर), डोंबिवली

सान्वि पुजारी, 8 वर्ष
मौडल इंगलिश स्कूल (विष्णुनगर), डोंबिवली

एक मजेदार ड्राइंग प्रतियोगिता

लास्या एन. जाशन, 7 वर्ष

भाविका सचिन तावड़े, 10 वर्ष

भक्ति एम. मिडिडोड्डी, 10 वर्ष

चंपक क्रिएटिव चाइल्ड कौंटैस्ट का आयोजन मौडल इंगलिश स्कूल (विष्णुनगर), डोंबिवली में किया गया. 41 छात्रों ने कौंटैस्ट में भाग लिया और अपनी ड्राइंग्स जमा कराईं. विजेताओं को सर्टिफिकेट्स दिए गए.

काव्या सुनील मोरे, 10 वर्ष
मौडल इंगलिश स्कूल, (कुंभार्खन पाड़ा), डोंबिवली

आकाश आर, 8 वर्ष
मौडल इंगलिश स्कूल (कुंभार्खन पाड़ा), डोंबिवली

सभी विजेताओं और भाग लेने वाले पाठकों को चंपक की ओर से बधाई और प्यार. आप भी कलम और कलर्स उठाइए और अपनी कला को हम तक पहुंचाएं. भाग लेने के लिए इस अंक में प्रकाशित 'चंपक क्रिएटिव चाइल्ड कौंटैस्ट' का विज्ञापन पढ़ें. जल्दी करें!

आर्या मुरकर, 6 वर्ष
मौडल इंगलिश स्कूल, (कुंभार्खन पाड़ा), डोंबिवली

इस महीने वाइल्ड कार्ड से प्रवेश का विषय है :

- मातृ दिवस
- विश्व हास्य दिवस
- राष्ट्रीय तकनीक दिवस

आप अपनी सामग्री ए4 साइज में ही भेजें.

हमारा पता : चंपक, दिल्ली प्रैस,
ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई-400031.
ईमेल : writetochampak@delhipress.in
फेसबुक पेज पर विजिट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine

श्वेता सतीश पनिक्कर, 9 वर्ष

वेदांत सचिन सावंत, 7 वर्ष

तनिष्क के. बोराटे, 10 वर्ष

चंपक क्रिएटिव चाइल्ड कौंटैस्ट का आयोजन मौडल इंगलिश स्कूल (कुंभार्खन पाड़ा), डोंबिवली में किया गया. 81 छात्रों ने कौंटैस्ट में भाग लिया और अपनी ड्राइंग्स जमा कराईं. विजेताओं को सर्टिफिकेट्स दिए गए.

चीकू

चित्रकथा : दास

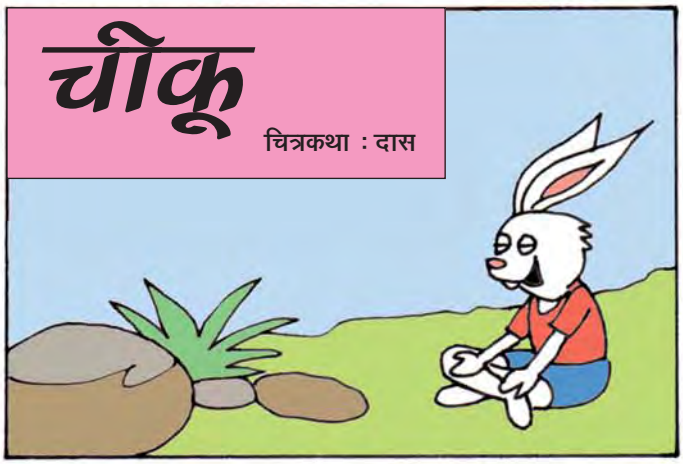

आज पहली अप्रैल है. आओ, हम चीकू को अप्रैल फूल बनाते हैं.

हां, वह हमें हर साल मूर्ख बनाता है. इस बार हम उसे बेवकूफ बनाएंगे.

दोनों चीकू से मिलने चल दिए.
देखो, वह योगा कर रहा है.

अरे, तुम दोनों भी मेरे साथ क्यों नहीं हो लेते हो?

लेकिन हम तो...

मुझे पता है कि आज पहली अप्रैल है और तुम मेरे साथ शरारत करना चाहते हो.

नहीं नहीं, हम तुम्हारे साथ हो लेते हैं.

योगा तुम्हें ताजगी का एहसास कराएगा, ऊर्जा महसूस होगी और मस्तिष्क को राहत मिलेगी.

हा, हा, हा, चीकू तो एक साधु की तरह बातें कर रहा है.

डमरू गधा उन के पास ही दौड़ता हुआ जा रहा था.
डमरू, तुम क्यों दौड़ रहे हो?
मुझे खुद को बचाने के लिए भागना पड़ रहा है, भागो.
क्या कोई खतरनाक जानवर है, जो उस का पीछा कर रहा है?
हमें भी भागना चाहिए.
वे तीनों भागे और एक झाड़ी के पीछे छिप गए.
हम यहां कब तक छिपे रहेंगे, जब हम जानते ही नहीं हैं कि हम किस से छिप रहे हैं?
कुछ समय बाद.
मैं नहीं समझता कि यहां कोई खतरा है.
यहां किसी खतरनाक जानवर होने के कोई संकेत भी नहीं हैं.
चलो, डमरू से पूछते हैं.
क्या उस ने हमें मूर्ख बनाया है?
वे तीनों डमरू के पास गए.
क्या तुम हमारे साथ कोई शरारत कर रहे हो? ऐसा कोई जानवर नहीं है जो तुम्हारा पीछा कर रहा हो.
मैं तो धोबी से दूर भाग रहा हूं, क्योंकि मैं ने उस के सभी धुले कपड़े गंदे कर दिए हैं. इसलिए वह मेरे पीछे पड़ा हुआ है.
ओह, हम ने तो खुद को ही बेवकूफ बना लिया. हा, हा, हा.

बताओ तो जानें

1. अगर तुम्हारे पास है
दूसरों से शेयर न करो
अगर शेयर किया तो
तुम्हारे पास नहीं रहेगा.

2. चलता हूं मैं कूदकूद कर
बच्चों को रख थैली में
खड़े रहना ही मेरा बैठना है
पड़ गए न तुम परेशानी में.

3. हमेशा से हूं हरा और भूरा
चिड़ियों का हूं मैं अच्छा घर
बच्चे चढ़ते मुझ पर प्यार से
वातावरण मुझ से शुद्ध होता.

4. रंगबिरंगा और खूबसूरत हूं
खुशबू फैलाऊं चारों ओर
पानी दे कर मुझे सहेजो
भौंरे तितलियां उड़ते चहुं ओर.

देखें तुम कितना जानते हो

1. टैलीविजन की खोज किस ने की?
   (क) ग्राहम बेल
   (ख) जौन लोगी बेयर्ड
   (ग) चार्ल्स फ्रांसिस जैनकिंस
   (घ) फिलो टेयलर फार्न्सवर्थ

2. पाचनतंत्र क्याक्या काम करता है?
   (क) शरीर में रक्त प्रवाह
   (ख) सांस लेने में सहायक
   (ग) हाथपैर हिलाने में मददगार
   (घ) खाना पचाना

3. फ्लाइंग सिख के नाम से किसे जाना जाता है?
   (क) मिल्खा सिंह
   (ख) हरबंश सिंह
   (ग) मनमोहन सिंह
   (घ) युवराज सिंह

4. एक बेबी फ्रौग यानी शिशु मेढक को क्या कहते हैं?
   (क) चूजा
   (ख) शावक
   (ग) टैडपोल
   (घ) घेंटुला

उत्तर (बताओ तो जानें) : 1–रहस्य, 2–कंगारू, 3–पेड़, 4–फूल.
उत्तर (देखें कितना जानते हो?) : 1–ख, 2–घ, 3–क, 4–ग.

बिंदु मिलाओ

चित्र को पूरा करने के लिए अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं.

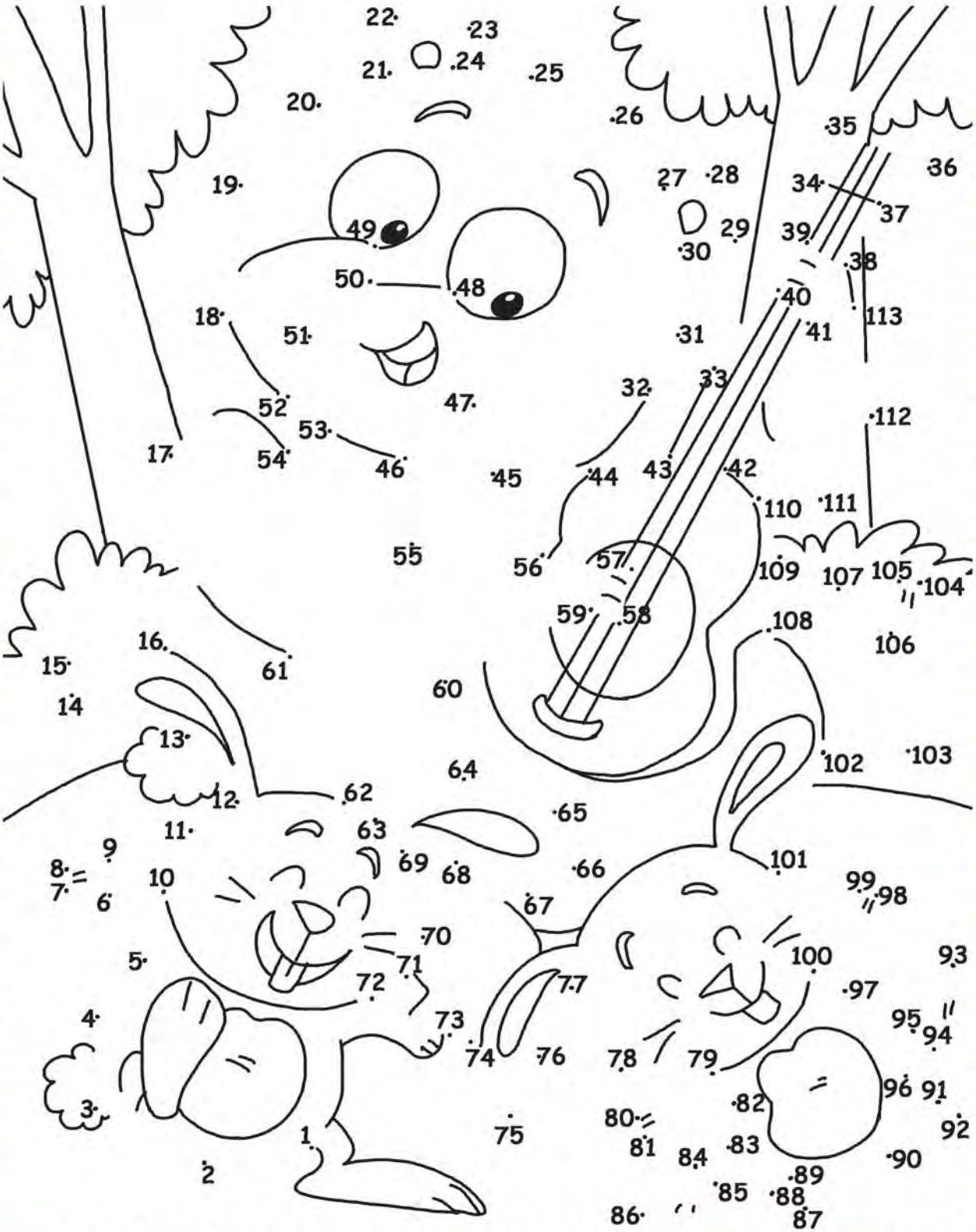

परी के कपकेक्स

कहानी ● कुसुम अग्रवाल

सुबहसुबह अचानक किसी ने दरवाजा खटखटाया तो टौमी बिलाव ने जा कर दरवाजा खोला. दरवाजे पर उस की पड़ोसिन परी बिल्ली थी. उस के हाथ में एक बड़ा सा डब्बा था, जिस से काफी अच्छी खुशबू आ रही थी. यह देख कर टौमी हैरान हुआ और मन ही मन सोचने लगा, 'परी मिठाई का डब्बा ले कर मेरे घर आई है? मैं परी को बरसों से जानता हूं. वह अव्वल दर्जे की कंजूस है.'

परी मुसकराई और बोली, ''टौमी, यह लो मैं ने कुछ कपकेक्स बनाए हैं. कुछ दिन पहले ही बेकिंग क्लासेस ज्वाइन की थीं. सोचा था अब घर पर भी कुछ पकवान बना कर देखे जाएं. इसलिए ये

कपकेक्स बनाए हैं. कृपया इन्हें खा कर बताना कैसे बने हैं?''

परी ने मिठाई का डब्बा टौमी के हाथ में पकड़ा दिया और वहां से चली गई. बेचारा टौमी इतना हैरान था कि उस ने परी को धन्यवाद भी नहीं दिया.

पर वह मन ही मन बहुत खुश था. उस ने डब्बा खोल कर देखा तो पूरे 20 कपकेक्स थे, जो दिखने में बहुत आकर्षक और स्वादिष्ठ लग रहे थे.

'मैं इतने सारे कपकेक्स अकेला नहीं खाना चाहता. इन में काफी चीनी होती है. ज्यादा चीनी स्वास्थ्य के लिए नुकसानदेह होती है. मैं अपने मित्रों को बुला लेता हूं,' फिर हम सब मिल कर ये कपकेक्स खाएंगे. बड़ा मजा आएगा.

टौमी ने अपने दोस्तों को फोन कर दिया. संयोगवश छुट्टी का दिन था. जल्दी ही सब आ धमके. कपकेक्स देख कर सब के मुंह में पानी आ रहा था.

''वाह, मुझे तो ये बहुत स्वादिष्ठ लग रहे हैं,'' सौफ्टी खरगोश ने कहा.

''मुझे तो इन का रंगरूप भी बहुत सुंदर लग रहा है,'' नीरू नेवला बोला.

''और इन की खुशबू के क्या कहने? मैं तो सड़क से गुजर रहा था, इन की खुशबू पा कर ही यहां दौड़ा चला आया,'' बल्लू हिरण ने कहा.

''ठीक है, अब पार्टी शुरू करते हैं,'' टौमी ने कहा और झट से एक कपकेक्स उठा कर खाना शुरू किया. मगर कपकेक्स खाते ही वह बुरा सा मुंह बनाने लगा. यह देख कर सब दोस्त घबरा गए.

''क्या हुआ टौमी?'' नीरू ने पूछा.

इसी बीच सौफ्टी खरगोश ने एक कपकेक्स को छू कर देखा. उस ने उसे हलका सा दबाया, ''दोस्तो, कपकेक्स असली नहीं हैं. ये तो क्ले के बने हैं. इन पर रंग किया गया है यानी उस ने मेरे साथ मजाक किया है,'' टौमी बोला, जिस का जी अभी तक घबरा रहा था और मुंह का स्वाद अब भी खराब था.

अचानक नीरू को कुछ याद आया और बोला, ''ओह, लगता है परी ने तुम को अप्रैल फूल बनाया है. आज पहली अप्रैल है न.''

नीरू की बात सुन कर सभी दोस्तों ने उस की हां में हां मिलाई.

'परी को अभी मजा चखाता हूं,' टौमी ने मन ही मन सोचा और बल्लू के कान में फुसफुसा कर कुछ

बोला. टौमी की बात सुन कर बल्लू दौड़ादौड़ा बाहर गया.

कुछ देर बाद जब बल्लू लौटा तो उस के साथ परी बिल्ली थी. वह कुछ घबराई हुई थी. वह टौमी के पास आई और बोली, ‘‘बल्लू ने मुझे बताया कि कपकेक्स खाने से तुम्हारी तबीयत खराब हो गई है. मुझे माफ कर दो टौमी. मुझे नहीं पता था कि मेरा यह छोटा सा मजाक तुम पर इतना भारी पड़ेगा. मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था. चलो, मेरे साथ डाक्टर के पास. मैं तुम्हें दिखा कर लाती हूं, कहीं तुम्हारी तबीयत ज्यादा खराब न हो जाए.’’

टौमी ने देखा तो घबराहट से परी पसीनापसीना हो रही थी. टौमी के सभी दोस्त परी को एकटक घूर रहे थे, मानो उस ने कोई बड़ा अपराध किया हो. यह देख कर परी शर्म से पानीपानी हो रही थी.

इसी बीच उस ने टैक्सी भी बुक करवा दी थी.

‘‘टौमी, टैक्सी आ गई है. चलो, हम डाक्टर के पास चलते हैं,’’ कह कर उस ने टौमी का हाथ पकड़ कर उसे उठाने की कोशिश की.

‘‘नहीं, मैं तुम्हारे साथ डाक्टर के पास नहीं जाऊंगा,’’ टौमी ने गुस्से में उस का हाथ झटकते हुए कहा.

यह सुन कर परी घबरा गई और बोली, ‘‘टौमी, मैं बहुत शर्मिंदा हूं. मैं वादा करती हूं कि आगे से कभी ऐसा नहीं करूंगी, पर डाक्टर के पास जरूर चलो. कहीं तुम्हारी तबीयत ज्यादा खराब न हो जाए.

‘‘ठीक है. यदि तुम डाक्टर के पास नहीं जाना चाहते तो मैं डाक्टर को यहीं बुला लेती हूं,’’ कह कर परी ने मोबाइल हाथ में लिया.

अचानक टौमी जोर से चिल्लाया, ‘‘अप्रैल फूल बनाया, क्या तुम को गुस्सा आया?’’

यह सुन कर परी के साथसाथ टौमी के सभी मित्र भी हैरान हो गए. सचमुच परी के साथसाथ वे भी अप्रैल फूल बन गए थे. सभी मिल कर मुसकराने लगे.

अब तक परी भी संभल गई थी. वह भी मुसकराने लगी, पर आज की घटना से उसे यह सबक मिला कि हमें किसी के साथ ऐसा मजाक नहीं करना चाहिए जिस की वजह से लेने के देने पड़ जाएं. ●

चित्र पूरा करें

इस चित्र में कुछ हिस्से खाली रह गए हैं. चित्र को देखें, उन्हें पूरा करें और फिर इन में रंग भरें.

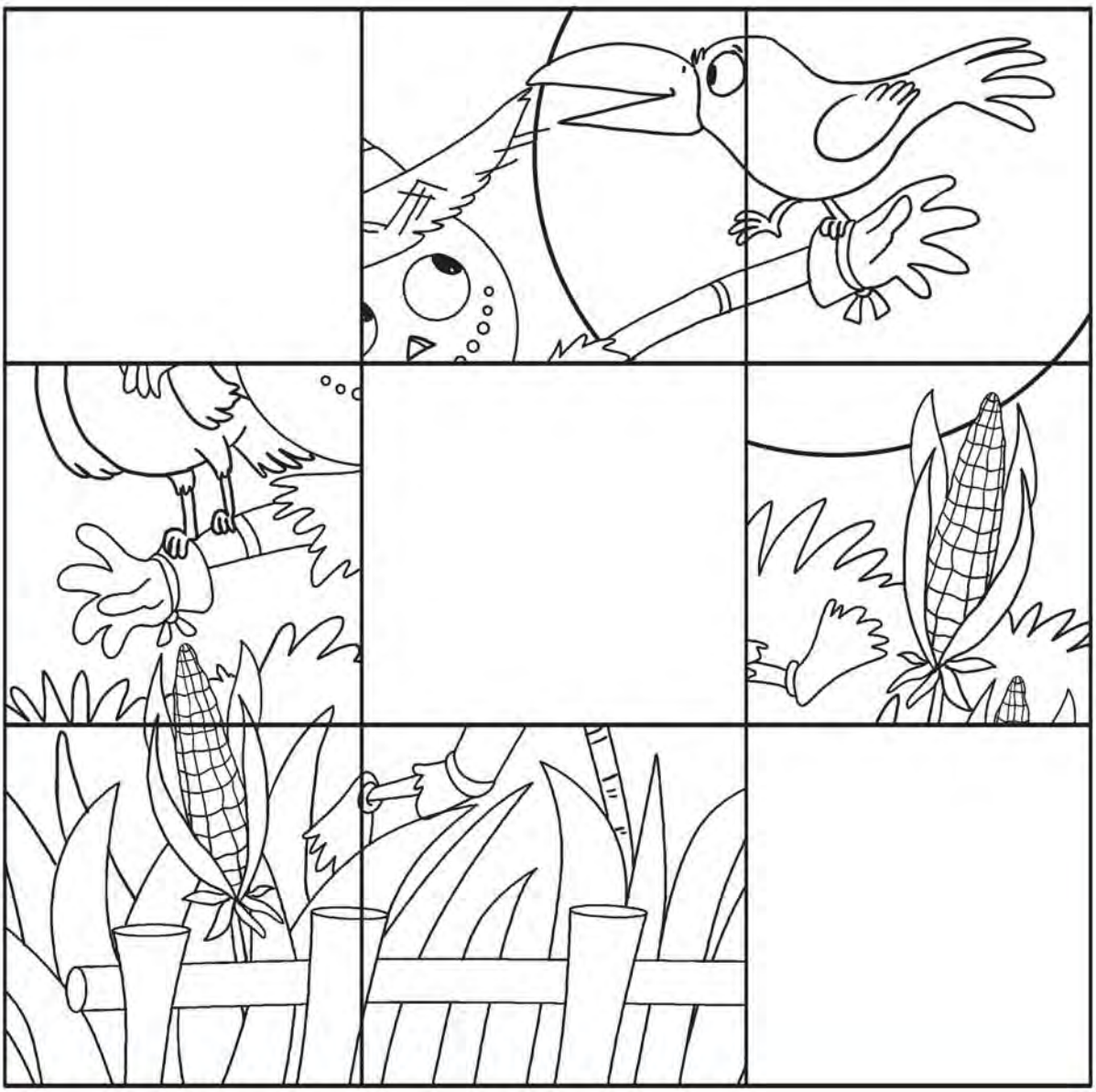

बौक्स में मकड़ी

इशानी एस

स्मार्ट

कार्डपेपर के इस्तेमाल से मजेदार फन बौक्स बनाए. अपने दोस्त को बेवकूफ बनाएं और मजे करें.

आप को चाहिए :

ए4 साइज के कार्डपेपर शीट, स्केल, कटर, कैंची, गोंद, डार्कब्राउन पेपर, गूगली आंखें और एक पुराना बौक्स, जिस में मकड़ी रखेंगे.

ऐसे बनाएं :

1. डार्कब्राउन पेपर से एक वृत्त काट लें. 8 लंबी पट्टियां काटें और मकड़ी का पैर बनाने के लिए उन्हें टेढ़ेमेढ़े जिगजैग की तरह मोड़ लें.

2. मकड़ी के शरीर से इन आठों पैरों को चिपका दें और गूगली आंखें लगा दें.

3. पेपर को स्प्रिंग जैसा बनाने के लिए ए4 कार्डपेपर से 2 इंच चौड़ी पट्टी काट लें. आप को कुल 12 पट्टियों की जरूरत पड़ेगी.

4. जैसा कि दिखाया गया है, 2 पट्टियों को गोंद से चिपका दें और उन्हें एक दूसरे के ऊपर मोड़ दें.

5. जब आप पट्टी के छोर पर आ जाएं, तो और पट्टियों को जोड़ दें और इसी तरह उन्हें मोड़ना जारी रखें.

5. पेपर स्प्रिंग की बनावट पूरी करने के लिए छोरों को गोंद से चिपका दें.

7. स्प्रिंग पर मकड़ी को चढ़ाने के लिए पेपर के एक छोटे से स्प्रिंग का इस्तेमाल करें और इसे पंखे की तरह मोड़ दें. इस के एक छोर को स्प्रिंग पर चिपका दें और दूसरे छोर को मकड़ी से चिपका दें.

8. एक छोटा सा बौक्स लें और उसे सजा लें.

3. स्प्रिंग और मकड़ी को बौक्स में रख दें. मकड़ी उस समय उछल पड़ेगी जब इसे पाने वाला बौक्स खोलेगा.

बेवकूफ बनाओ और खुशी मनाओ.

अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रविष्टि
writetochampak@delhipress.in या एक फोटो खींच कर +91 9619587613 पर भेज दें.

गिनो और लिखो

7 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है. खाद्य सामग्रियों की गिनती करें और नीचे दिए बौक्स में लिखें.

हरी मटर	सेब	पालक	मक्का
केला	दूध	नाशपाती	अंडा

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

बिना पंखों की उड़ान

कहानी ● ओमप्रकाश क्षत्रिय

चुनमुन चिड़िया को देख कर चींचीं चिल्लाया, ‘‘मां, मुझे दो, मुझे दो.’’

चींचीं को देख कर उस का भाई भी चिल्लाने लगा, ‘‘मां, मुझे दो.’’

तभी उस के पापा ने कहा, ‘‘अरे बेटा, तुम चिल्लाते क्यों हो? तुम्हारी मां सभी को बारीबारी से दाना चुगाएगी.’’

इस पर चींचीं बोला, ‘‘लेकिन मुझे जोर की भूख लग रही है.’’

‘‘और मुझे भी,’’ उसी के साथ चींचीं का भाई भी बोल पड़ा.

चुनमुन ने बारीबारी से दोनों को दाना खिलाया. फिर बोली, ‘‘चींचीं, इतनी जल्दबाजी ठीक नहीं है, कभीकभी मुसीबत आ सकती है.

‘‘मगर चींचीं कहां किसी की बात मानने वाला था. उसे शरारत करने में मजा आता था. कभी वह अपने भाई को गुदगुदी कर देता तो कभी पापा को सोते हुए छेड़ देता.

उसे सभी से मस्ती करने में मजा आता था.

एक दिन मौसम खराब था. चुनमुन दाना लेने गई थी. अचानक जोर की हवा चलने लगी और उन का घोंसला हिलने लगा. चींचीं घबराया और चिल्लाया, ‘‘भाई, भूत आ रहा है. संभल कर बैठ जाओ,’’ कहते हुए वह उछल कर घोंसले के एक कोने में बैठ गया.

‘‘यह भूत नहीं, आंधी है,’’ भाई ने कहा, ‘‘इस तरह चिल्ला कर उछलो मत,’’ मगर चींचीं को पानी की तेज बौछारों वाली हवा से डर लग रहा था. वह भाई के पीछे छिपने के लिए उछला तभी जोर की हवा का झोंका आया और चींचीं का संतुलन बिगड़ गया. वह कुछ समझता, तब तक वह घोंसले से हवा में उछल चुका था.

तभी वह किसी चीज से टकराया. उसे जोरदार चोट लगी थी. वह चिल्ला पड़ा. ‘‘मां, बचाओ. मुझे भूत ने पकड़ लिया है.’’

तभी चुनमुन वहां आ गई. वह चींचीं के पास आ कर बोली, ‘‘बेटा, आंखें खोलो.’’

‘‘नहीं मां,’’ चींचीं दर्द से कराहते हुए बोला, ‘‘मुझे भूत ने जकड़ लिया है और मेरी पीठ पर वह सुई चुभो रहा है.’’

यह सुन कर चुनमुन ने चींचीं के सिर पर हाथ फेर कर कहा,‘‘अरे चींचीं, तुम्हें भूत ने नहीं जगड़ा, तुम जमीन पर गिरे हुए हो. ऊपर देखो. घोंसला वहां है. तुम वहां से नीचे गिरे हो.’’

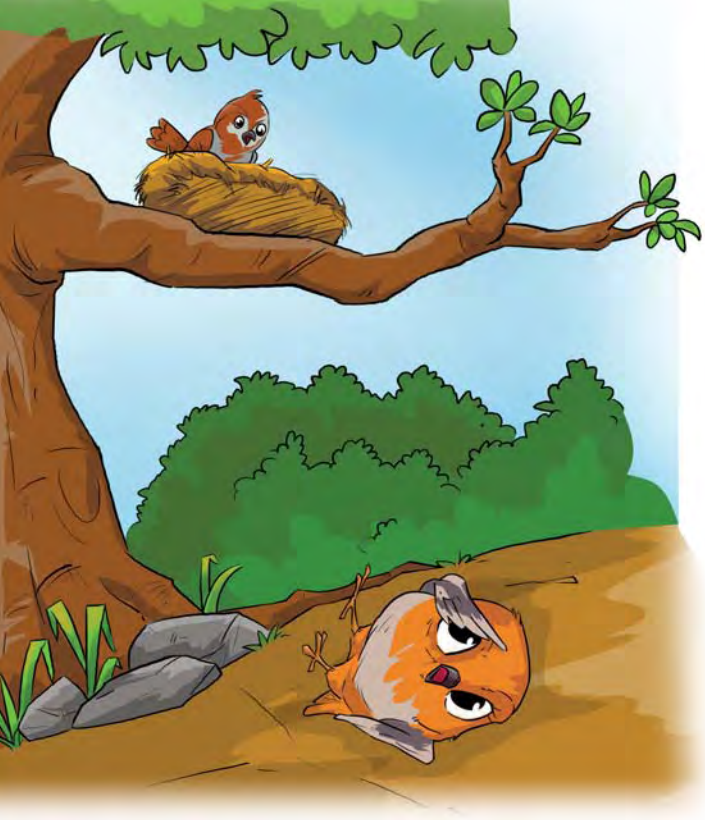

यह देख कर चींचीं जोर से रोने लगा. ‘‘मां, अब क्या होगा? मैं घोंसले में कैसे जाऊंगा? मेरे तो पंख भी नहीं आए हैं. मैं उड़ नहीं सकता हूं,’’ वह जोरजोर से रोने लगा.

‘‘चींचीं को घोंसले तक कैसे पहुंचाएं?’’ उस की मम्मी ने उस के पापा से पूछा.

‘‘यह तो हमें सोचना पड़ेगा,’’ यह कहते हुए उस के पापा और चुनमुन ने दिमाग पर जोर डाला. उसे याद आया कि उस ने हंस और कछुए की कहानी टीवी पर देखी थी. उस कहानी में हंस कछुए को अपनी पीठ पर ले कर उड़ा था. ‘‘हम हंस की तरह चींचीं को ले कर उड़ेंगे,’’ यह कहते हुए चुनमुन लकड़ी का एक टुकड़ा ले आई.

चुनमुन ने उड़ते हुए लकड़ी का एक सिरा पकड़ा. दूसरा सिरा चींचीं के पापा ने पकड़ लिया. फिर वे बोले, ‘‘चींचीं, तुम मुंह से लकड़ी पकड़ लो. हम तुम्हें ले कर उड़ेंगे.’’

‘‘ठीक है पापा,’’ कहते हुए चींचीं ने लकड़ी पकड़ ली. चुनमुन और चींचीं के पापा उड़ने लगे. वे कुछ ही ऊपर उड़े थे कि चींचीं बोल पड़ा, ‘‘पापा, बहुत मजा आ रहा है. मैं बिना पंख के उड़ रहा हूं,’’ यह कहते ही धड़ाम की आवाज आई और चींचीं वापस जमीन पर आ कर गिर पड़ा.

‘‘अरे, यह क्या हुआ?’’ वह अपनी पीठ मसलते हुए बोला, ‘‘मैं तो वापस जमीन पर आ कर गिर गया.’’

इस पर चुनमुन ने उसे समझाया, ‘‘बेटा, तुम ने मुंह से लकड़ी पकड़ रखी थी इसलिए उड़ते समय तुम्हें बोलना नहीं चाहिए. इस से तुम्हारा मुंह खुल जाएगा और तुम ने मुंह से जो लकड़ी पकड़ी है वह छूट जाएगी. इस तरह तुम अपने घोंसले में नहीं जा पाओगे,’’ कहते हुए चुनमुन और चींचीं के पापा ने लकड़ी पैर से पकड़ ली.

अब इस लकड़ी को अपने मुंह से जोर से पकड़ लो. चाहो तो अपने पैर से भी इसे पकड़ सकते हो, ताकि तुम गलती से बोलो भी तो नीचे नहीं गिरो. पैर के बल लकड़ी पर उलटे लटके रहोगे,’’ चुनमुन ने कहा तो चींचीं ने झट से लकड़ी पकड़ ली. वह अपने पैर से भी लकड़ी को कस कर पकड़ चुका था. पहले एक बार गिरने के कारण उसे डर लग रहा था.

चुनमुन और चींचीं के पापा उसे ले कर वापस उड़े.

‘‘बेटा, ध्यान से उड़ना. बोलना मत,’’ चींचीं के पापा ने कहा और चींचीं बोला, ‘‘जी पापा.’’

चींचीं के यह कहते ही जोर का झटका लगा. चींचीं ने कस कर लकड़ी पकड़ ली थी. वह एकदम से उलटा हो गया. चींचीं फिर बोल पड़ा था, इस कारण मुंह में पकड़ी लकड़ी छूट गई थी. वह नीचे गिर जाता मगर उस ने अपने दोनों पैरों से भी लकड़ी को पकड़ रखा था.

वह एकदम उलटा हो गया. अब उस का मुंह आसमान की तरफ था. वह आसमान देख कर चिल्लाया, ''पापा, जादू हो गया. धरती गायब हो गई. नीचे आसमान आ गया.''

यह सुन कर चुनमुन और चींचीं के पापा को हंसी आ गई.

''ठीक कहते हो बेटा, धरती गायब हो गई. आसमान आ गया है. थोड़ी देर में देखना धरती वापस आ जाएगी,'' कहते हुए चुनमुन और चींचीं के पापा ने जोर से उड़ान भरी. वे चींचीं को ले कर घोंसले के पास आ गए.

चींचीं का भाई घोंसले में बैठा हुआ था. उस ने चींचीं की पीठ पर हाथ लगाया.

चींची चिल्लाया. ''पापा, भूत,''

''कहां?'' उस के पापा ने पूछा.

''मेरी पीठ के नीचे,'' वह दोबारा उछलते हुए बोला.

''यह भूत नहीं, मैं हूं,'' चींचीं के भाई ने कहा. ''तुम अपने दोनों पैरों से लकड़ी छोड़ दो. तुम घोंसले में आ चुके हो,'' कहते हुए उस ने चींचीं को घोंसले में उतार लिया.

चींचीं ने तुरंत घोंसले से नीचे झांका, अरे पापा, धरती तो नीचे है.

''और आसमान ऊपर है,'' चुनमुन बोली तो चींचीं हंसने लगा, ''इस का मतलब मैं उलटा उड़ रहा था,'' चींचीं बोला.

''और वह भी बिना पंख के,'' कहते हुए चुनमुन, चींचीं, उस का भाई और पापा जोरजोर से हंसने लगे.

''हां, बिना पंख के,'' चुनमुन और उस के पापा बोले. आज उन्हें चींचीं की शरारत की वजह से एक नई तरकीब हाथ लग गई थी. वे अपने बच्चे को बिना पंख के भी उड़ा सकते हैं. ●

AMALGAMATION GRAPHICS

दादाजी और राष्ट्रीय पालतू पशु दिवस

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

रिया और राहुल उदास हो कर अन्य बच्चों को अपने कुत्तों के साथ पार्क में टहलते देख रहे थे.

क्या हुआ बच्चो? तुम इतने उदास क्यों दिख रहे हो?

दादाजी, यहां इतने सारे लोग अपनेअपने पालतू जानवरों के साथ आए हैं. वे उन्हें बाहर घुमाने और खेलने लाए हैं.

लेकिन हमारे पास तो एक छोटा सा पिल्ला भी नहीं है.

हम्म... लेकिन बच्चो, हमारे लिए अपने घर में पालतू जानवर रखना संभव नहीं है.

पालतू पशु रखना बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है. पालतू पशु खुले स्थान में ही अच्छे रहते हैं, क्योंकि वहां वे दौड़ और खेल सकते हैं. ऐसा बंद घरों में नहीं हो पाता है.

लेकिन दादाजी, काफी लोगों के घर तो हमारे घर से भी छोटे हैं लेकिन उन के पास 2-3 पालतू जानवर हैं.

मैं जानता हूं, रिया. लोग अपने घरों में चिड़िया पालते हैं. लेकिन ये चिड़ियां उड़ना चाहती हैं. उन्हें पिंजरे में बंद कर के रखना ठीक नहीं है. कुछ लोग तो उन की देखभाल भी नहीं करते हैं.

यदि तुम अपने पालतू पशुओं की ठीक से देखभाल नहीं करते हो तो उन्हें अपने घर में रखने का तुम्हारा कोई हक नहीं बनता है?

बिलकुल सही बात है. ऐसा इसलिए होता है कि हमारे पास समय नहीं होता या हमारे घर में इन के लिए जगह नहीं होती है.

वे लोग जिन्होंने पालतू जानवरों के रूप में कुत्तों को पाला है, उन्हें रोज बाहर टहलने ले जाना पड़ता है. अगर वे ऐसा नहीं करेंगे तो ये जानवर कमजोर हो जाएंगे.

ओह, तब तो यह बहुत बुरी बात है.
हां, इसलिए अगर हम पालतू पशु रखते हैं तो हमारी जिम्मेदारी बनती है कि उन की ठीक से देखभाल भी करें और उन की जरूरतों को पूरा करें साथ ही लोगों को इस बारे में बताएं कि 11 अप्रैल को राष्ट्रीय पालतू पशु दिवस है.
दादाजी, हमें पालतू पशुओं के साथ दोस्तों की तरह व्यवहार करना चाहिए. हमें उन की रक्षा करनी चाहिए, तभी वे हमारी रक्षा करेंगे.
हां, लेकिन इस के बावजूद दादाजी, हम एक पालतू पशु अपने घर में नहीं रख सकते.
लेकिन हम एक काम तो कर ही सकते हैं.
वह क्या, दादाजी?
हम स्थानीय चिड़ियाघर में जा कर वहां एक छोटा पक्षी या जानवर गोद ले सकते हैं और इस की देखभाल चिड़ियाघर के अधिकारियों की मदद से लगातार कर सकते हैं. वह रहेगा तो चिड़ियाघर में, लेकिन एक तरह से वह हमारा पालतू जानवर होगा.
SONAL
हां, हम ऐसा करेंगे दादाजी. हर छुट्टी वाले दिन उसे देखने चिड़ियाघर जाएंगे.
दादाजी मुसकराए और खुशी से उन की रजामंदी पर सिर हिला दिया.

नन्हीं कलम से

विश्व स्वास्थ्य दिवस

लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए प्रत्येक वर्ष 7 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है.

जिन लोगों को सही इलाज नहीं मिल पाता उन्हें स्वास्थ्य लाभ देने के लिए इसे मनाया जाता है, ज्यादातर कार्यक्रमों का आयोजन विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रत्येक साल पूरे विश्व में किया जाता है. मेरे विचार से यह काफी महत्त्वपूर्ण दिवस है, क्योंकि मनुष्य के जीवन में स्वास्थ्य महत्त्वपूर्ण तथ्य है और लोग इसे सामान्यतया अनुदान के रूप में लेते हैं, लेकिन यह वास्तव में हरेक के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए महत्त्वपूर्ण बात है.

दीपल घोघरे, 14 वर्ष, भोपाल

अथर्व विनायक जोशी, 10 वर्ष
पुणे

के. जाह्नवि, 10 वर्ष, तमिलनाडु

रचनात्मकता

यह आप की कल्पनाशीलता की रचनात्मकता और उसे समझने के संदर्भ में है. किसी चीज को खास और अलग तरह से बनाना रचनात्मकता कहलाती है. रचनात्मकता का उपयोग कला, कविता और गद्य लेखन में किया जाता है. यह आप की संवेदना और भावों को व्यक्त करती है. यह मौखिक और गैरमौखिक संवाद में इस्तेमाल होती है. रचनात्मकता आप के सोचने का एक तरीका है. आप की सोच, आइडिया, शैली सबकुछ आप की होती है. यह आप को नए तरीके से सोचने में मदद करती है. यह किसी और के कामों की नकल करने जैसा काम नहीं है. इस का मतलब आप में योग्यता और प्रतिभा का होना है, जिस के बल पर आप कला के बारे में सोच सकते हैं. रचनात्मक का मतलब आप अपना दिमाग लगाते हैं और नए मूल विचारों के साथ प्रकट होते हैं. सब से पहले आप के पास प्रेरक विचार होने चाहिए. इसी के बल पर लोग नए रास्ते तलाशते हैं और खास चीजें बनाते हैं. रचनात्मकता का मतलब है सीमा से बाहर हो कर सोचना यानी एक दायरे में न बंधा होना. इस का मतलब ऐसी चीज को बनाना भी है जिस का अस्तित्व विश्व में नहीं है. आप जो कुछ भी सोचते हो, वही रचनात्मकता है. क्या तुम ने कभी किसी चीज की रचना या खोज की?

नायरा शाह, 9 वर्ष, पुणे

अनिश वाडनेकर, 9 वर्ष, पुणे

शिक्षा

शिक्षा सफलता के दरवाजे की चाभी है. यह हमारे सपनों को साकार करने और उन्हें वास्तविक बनाने की एक जरूरत है. किसी चीज को प्राप्त करने की खुशी का यह एक हिस्सा है और यह बताती है कि हमारा परिवार और दोस्त किस स्तर के हैं. ज्यादातर लोग इस से वंचित हैं. वे गरीब हैं और इसे हासिल करने का खर्च नहीं उठा पाते. उन की स्थिति के बारे में सोचना मुश्किल है. उन्हें खुद को बदलने और समृद्ध करने का एक भी मौका नहीं मिलता. मैं ने अपनी शिक्षा हासिल कर ली है और मैं समझता हूं आप ने भी हासिल कर ली होगी. इसे काम लायक बनाओ और कभी भी इस से दूर मत भागो. आप देखोगे कि आसमान में हुंकार भरते हुए आप खुशी के रंगों में डूबे हुए उड़ रहे हो.

स्पूर्ति शंकर, 10 वर्ष, बेंगलुरु

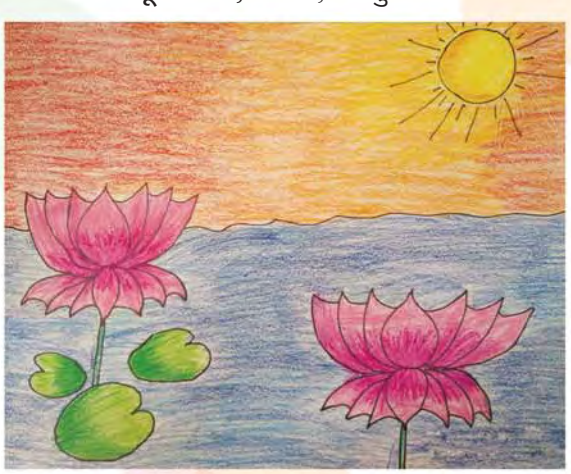

पोशिता ईरा जावा, 6 वर्ष
पंजाब

प्राची फांसे, 9 वर्ष
मुंबई

पौपकौर्न

पौपकौर्न, यह पीला और सफेद है. सभी को लुभाता है. जिस ने भी इसे खाया, वह खुशी से भर जाता है. नमकीन और थोड़ा मिर्चीदार, बच्चों को यह हमेशा खुशी और उल्लास से भर देता है. सभी इसे चटकारे ले कर खाते हैं.

आर. सहाना, 10 वर्ष
चैन्नई

यह कूदने वाला मेढक है. इसे हमारे 9 वर्षीय पाठक शिवम यादव ने दिल्ली से बना कर भेजा है.

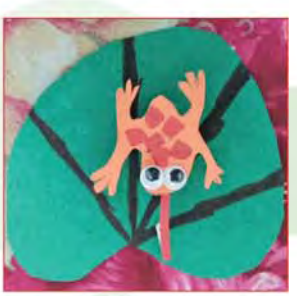

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:

चंपक, दिल्ली प्रैस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई- 400031

writetochampak@delhipress.in 9619587613

www.facebook.com/ChampakMagazine

http://www.youtube.com/ChampakSciQ

हम आप की सामग्री लौटा नहीं सकते इसलिए हमें भेजी सामग्री की कापी अपने पास रखें.

मत भाग दीपू

कहानी ● मेधाविनी मोहन

दीपू एक जगह ज्यादा देर तक बैठ ही नहीं पाता था. उस के पैरों में मानो चकरघिन्नी लगी थी. उस से धीमे नहीं चला जाता था. उसे अगर एक जगह से दूसरी जगह जाना होता, तो वह फट से दौड़ लगा देता. फिर चाहे रास्ते में कोई टकराए या किसी चीज पर उस का पैर पड़ जाए या फिर खुद वह लड़खड़ा कर गिर जाए.

छोटीमोटी चोटों का उस पर कोई असर नहीं होता था. यदि वह कभी गिर भी जाता, तो बेफिक्री से उठता, कपड़े झाड़ता और फिर दोबारा दौड़ने लगता.

घर में दादीमां बेचारी कितनी बार उस से टकरा कर गिरतेगिरते बचतीं. वे चिल्लातीं, तो उन्हें कंधे से पकड़ कर गोलगोल घुमाते हुए कहता, ‘‘दादीमां, हमेशा चश्मा लगा कर रखा करो, मैं आप को दूर से आता हुआ दिखाई दे जाऊंगा.’’

पतंग लूटने के चक्कर में वह छत पर बिना नीचे देखे दौड़ लगाता और सूखने के लिए रखे खाने के सामान पर चढ़ जाता. उसे डांट भी खूब पड़ती, पर उस की आदत नहीं सुधरती.

शाम को पापा औफिस से आ कर उस से पानी मांगते, तो वह तुरंत दौड़ते हुए जाता, जल्दीजल्दी गिलास में पानी भरता और वैसे ही भागते हुए आ कर पकड़ा देता. ऐसा करने से फर्श पर पानी छलक जाता और गिलास भी आधा खाली हो जाता.

एक बार तो गीले फर्श पर फिसल कर उस की छोटी बहन को जोर की चोट लग गई थी. छोटी बहन के गिरने से उसे दुख तो हुआ था, पर एकदो दिन थोड़ा कम दौड़ने के बाद फिर वह अपने पुराने ढर्रे पर ही लौट आया था.

ऐसा नहीं कि दीपू यों ही दौड़ता था. दरअसल, खेलकूद में उस की काफी रुचि थी और बड़ा हो कर वह इंटरनैशनल रेसिंग चैंपियन बनना चाहता था. स्कूल की दौड़ प्रतियोगिताओं में हमेशा वह अव्वल

आता था. पढ़ने में भी वह ठीक था. टीचर्स उसे प्यार करते और हमेशा उस के दौड़ते रहने पर टोकते.

टीचर ने उसे कितनी बार समझाया था, ‘‘बेटा, दौड़ना केवल मैदान में ही अच्छा लगता है. हर जगह ऐसे भागना अच्छे मैनर्स में नहीं आता. ऐसे बिना इधरउधर देखे भागने की आदत से तो किसी दिन तुम खुद को बड़ा नुकसान पहुंचा लोगे,’’ मिस मीना बोलीं. लेकिन दीपू को दौड़ने में मजा आता था. बाकी लोग पीछे रह जाते, तो उसे अच्छा लगता. उसे समझ नहीं आता कि उस के दौड़नेभागने से सब इतने परेशान क्यों रहते हैं. यहां तक कि उस के दोस्त भी उस से कहते, ‘‘इतना मत भाग दीपू,’’ पर वह उन की अनसुनी कर देता.

एक दिन वह परिवार के साथ घूम ने गया, तो बारबार सब से आगे भागता. भीड़ में नजरों से ओझल होने पर सब परेशान हो जाते और उस का नाम ले कर पुकारते.

अचानक वह भागता हुआ लौट कर आता, तो सब की जान में जान आती. वह सड़क भी ऐसे ही दौड़ता हुआ पार करता था. स्कूल थोड़ी सी दूरी पर होने से पैदल ही आनाजाना होता था.

सब ने उसे बहुत समझाया कि सड़क पर भागा नहीं करते और पार करते समय ध्यान से दोनों तरफ देख कर आराम से चलना चाहिए, लेकिन दीपू चैंपियन को यह बात कहां समझ में आनी थी. उस के घर वाले बहुत चिंतित रहते थे.

मनु दीपू की छोटी बहन थी, जो उस के ही स्कूल में पढ़ती थी.

दोनों की टाइमिंग अलग होने से मनु को स्कूल छोड़ने लाने मम्मी जाया करती थीं. लेकिन सर्दियों में दोनों की कक्षाओं का समय एक हो गया था. मम्मी ने दीपू से पूछा कि तुम मनु को भी साथ स्कूल ले जाओगे. मनु भी जोश में थी कि कल से वह भैया के साथ स्कूल जाएगी.

अगली सुबह जब दोनों भाईबहन तैयार हो कर स्कूल जाने के लिए बाहर निकले, तो दीपू अपनी आदत के अनुसार दौड़ने लगा.

वह कुछ ही आगे बढ़ा था कि पीछे से मनु की रोंआसी आवाज आई, ''भैया,'' दीपू ठहर कर सोचने लगा, 'ओह, इसे तो भूल ही गया,' फिर मुड़ कर वापस आया और मनु का हाथ पकड़ा.

तभी सामने से एक कार निकली. दीपू ने झटके से मनु को पीछे खींच कर रोका और डांट लगाई. फिर उस का हाथ पकड़ कर वह दाएंबाएं देखते हुए सावधानी से सड़क पार करने लगा.

घर के दरवाजे पर उन्हें छोड़ने पेरैंट्स आए थे, दीपू ने मुड़ कर उन्हें देखा और हंसते हुए हाथ हिला दिया. शायद उसे समझ आ गया था कि उस के बेवजह दौड़नेभागने से उसे प्यार करने वाले लोग इतना परेशान क्यों होते थे. इधर सब बातों से अनजान मनु बड़े विश्वास के साथ अपने भैया का हाथ थामे फुदकती हुई स्कूल जा रही थी. ●

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.

हमारी और उन की प्रतिक्रियाएं

जब मनुष्य को डराया जाता है तो वह या तो खतरे से लड़ता है या भाग जाता है. इसे 'लड़ो या भागो' क्रिया कहते हैं. ज्यादातर जानवर भी हमारी तरह ही बरताव करते हैं, जैसे स्तनधारियों की एक प्रजाति पोसुम को जब किसी अन्य जीव द्वारा डराया जाता है तो वह मरे होने का बहाना करता है.

पोसुम उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका में पाए जाने वाले स्तनधारी जीव हैं. ये लंबाई में ढाई फीट तक बढ़ते हैं, जो एक बिल्ली के बराबर हैं. यह एकमात्र धानी प्राणी है, जो अपने बच्चों को धानी यानी थैली में ढोते हैं. ये उत्तरी अमेरिका में पाए जाते हैं. दूसरे स्तनधारी प्राणी कंगारू और कोआला भालू हैं, जो अंटार्कटिका में पाए जाते हैं.

जब भी पोसुम को जंगली कुत्ते या लोमड़ी से खतरे का आभास होता है, तो वह सदमे में चली जाती है. उस का शरीर सख्त हो जाता है और वह जमीन में गिर जाती है. उस के बाद उस के मुंह से बहुत सी लार यानी झाग निकलने लगता है और एक मरे हुए जानवर की तरह उस से तेज दुर्गंध निकलने लगती है, जिस कारण वह शिकारी के खाने लायक नहीं रह जाती.

वास्तविकता में पोसुम शिथिल और अचेत हो जाती है ठीक वैसे ही जैसे हम बेहोश हो जाते हैं. इस अवस्था में वह 40 मिनट से 4 घंटे तक पड़ी रह सकती है. जब पोसुम को यह आभास हो जाता है कि अब वहां कोई खतरा नहीं है, तो वह फिर उठ खड़ी होती है. पोसुम की इस योग्यता को जिस में वह मरने का बहाना बनाती है,'प्लेइंग पोसुम' कहलाती है.

सुलझाएं

नीचे दिए चित्र के 2 टुकड़े खो गए हैं. सही टुकड़े की पहचान करें और चित्र को पूरा करें.

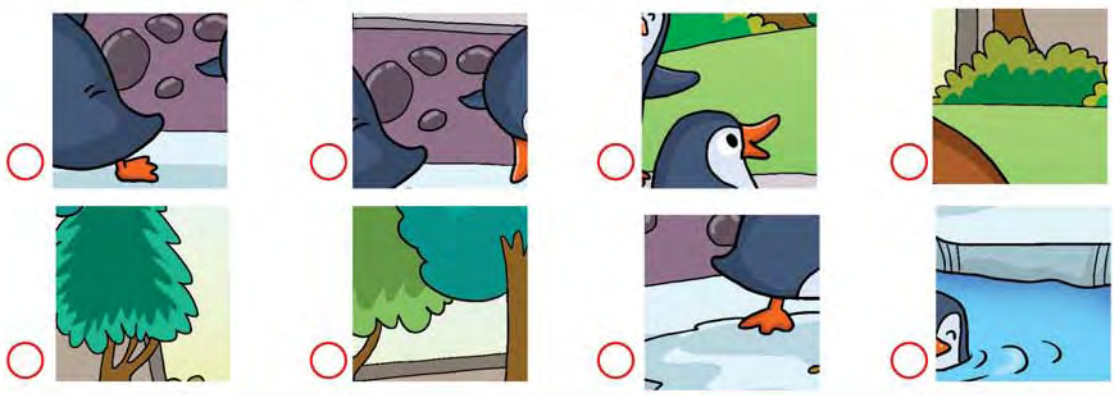

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

छुआछूत का दंश

कहानी ● कुमुद कुमार

आजादी से पहले हिंदू समाज की निम्न जातियां भेदभाव और छुआछूत का दंश झेल रही थीं. अनेक लोग इस के शिकार हुए. उन्हीं में से एक थे भारत के संविधान निर्माता डा.भीमराव अंबेडकर.

एक बार बालक भीमराव अपने बड़े भाई के साथ अपने पिताजी रामजी सकपाल से मिलने जा रहे थे. दोनों भाई महाराष्ट्र के एक छोटे से स्टेशन मसूर पर रेलगाड़ी से उतरे, लेकिन उन के पिताजी रेलवे स्टेशन से काफी दूर रहते थे.

दोनों भाइयों ने हाथ से खींचे जाने वाला रिक्शा किराए पर लिया.

हाथ से रिक्शा खींचने वाला व्यक्ति खुशीखुशी उन्हें अपने रिक्शे में बैठा कर चलने लगा. काफी दूर जाने के बाद उस ने उन दोनों से पूछा, ‘‘अरे बच्चो, तुम किस जाति के हो?’’

भीमराव और उन के भाई ने बड़ी सहजता से बेहिचक कहा, ‘‘हम महार जाति के हैं.’’

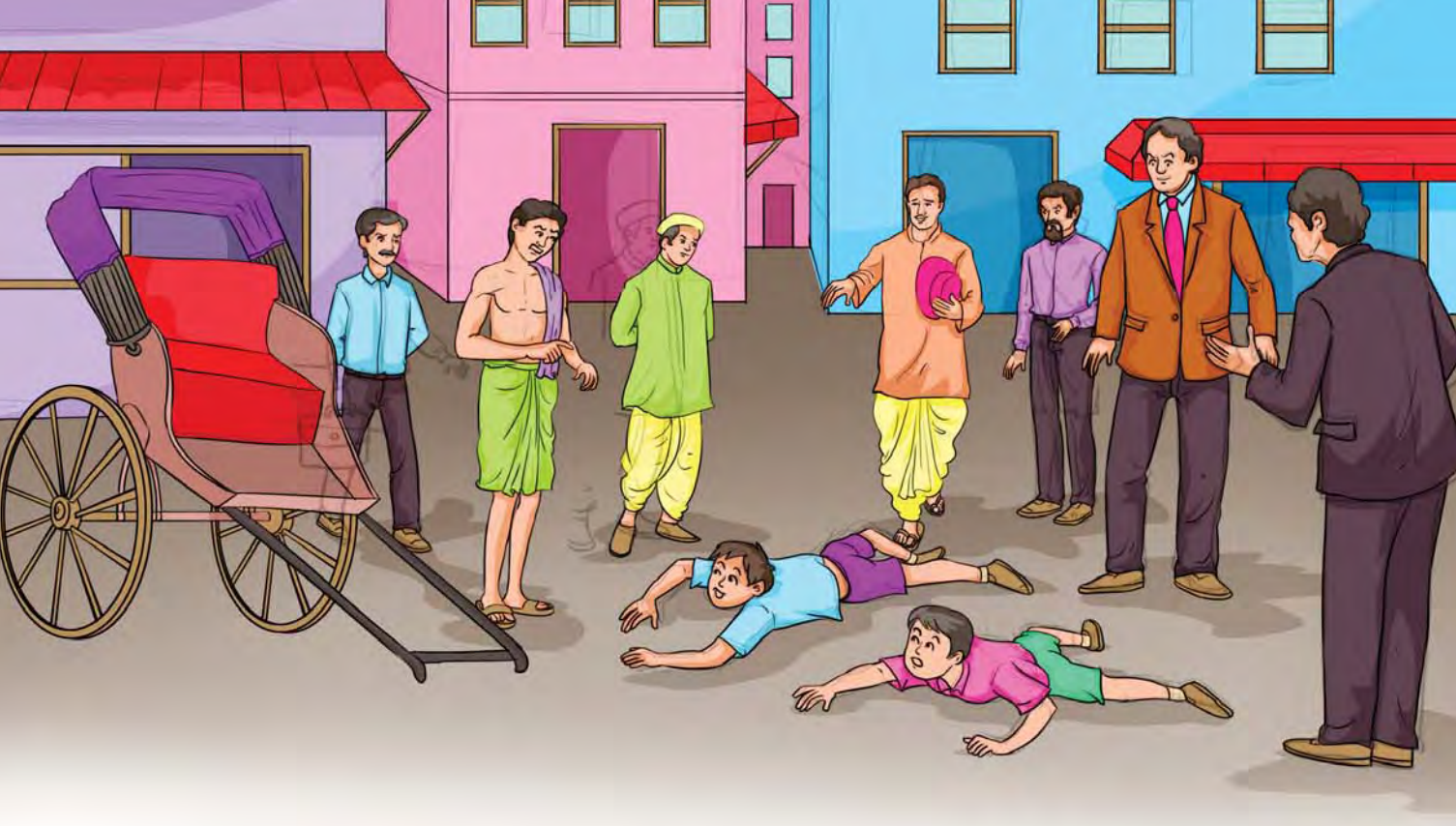

यह सुनते ही रिक्शा वाला बहुत गुस्सा हो गया, क्योंकि महार जाति के लोग निम्न श्रेणी के समझे जाते थे. उस ने रिक्शे का अगला सिरा ऊंचा उठाया, जिस से वे दोनों बालक रिक्शे से पीछे लुढ़क गए. फिर वह उन दोनों को गालियां बकने लगा और बोला, ''तुम दोनों ने मेरे रिक्शे में बैठ कर मुझे अपवित्र कर दिया है.''

धीरेधीरे वहां भीड़ इकट्ठी होने लगी. फिर तो यह बात जंगल की आग की तरह फैल गई कि महार जाति के बच्चों ने रिक्शे में बैठ कर उस के रिक्शे को अपवित्र कर दिया है.

फिर तो वहां मजमा लग गया. जो भी आता वही भीमराव और उन के भाई को धिक्कारता, ''निम्न जाति के लोग होते ही ऐसे हैं. उन दुष्ट बालकों ने बेचारे रिक्शे वाले का रिक्शा छू कर अपवित्र कर दिया और उस का दिन भी खराब कर दिया.''

कोई भी उन दोनों बालकों की तरफ से बोलने वाला नहीं था. दोनों भाई टुकरटुकर देख रहे थे. उन्हें कुछ भी समझ नहीं आ रहा था. समझ में आ रहा था तो बस, निम्न जाति में पैदा होने का पाप.

भीमराव और उन के भाई के पास इतने पैसे भी नहीं थे कि रिक्शे वाले की दिनभर की मजदूरी दे सकें. रिक्शे वाले ने गालियां बक कर उन के मन में खौफ पैदा कर दिया.

धीरेधीरे भीड़ छंट गई. वह रिक्शे वाला भी अपना रिक्शा ले कर चलता बना.

अब भीमराव और उन के बड़े भाई के पास कोई और रास्ता नहीं था. दोनों चिलचिलाती धूप में पैदल ही पिताजी से मिलने चल पड़े. धूप इतनी तेज नहीं थी जितने कड़े उस हाथ रिक्शे वाले के कहे शब्द थे.

उस चिलचिलाती धूप में दोनों भाई पैदल चलतेचलते भूखप्यास से बेहाल हो गए. भूख तो फिर भी बर्दाश्त की जा सकती थी, लेकिन ऐसी भयानक गरमी में प्यास को बर्दाश्त करना असंभव था.

दोनों भाई पानी की तलाश में इधरउधर गए, लेकिन निम्न जाति होने के कारण किसी ने उन्हें एक बूंद पानी भी पीने के लिए नहीं दिया. यह बात आज सुनने में अजीब लग सकती है, लेकिन लगभग 100-125 साल पहले समाज की यही स्थिति थी. उन

दिनों निम्न जाति का कोई व्यक्ति कुएं या तालाब से पानी भर लेता था तो उस कुएं और तालाब को अपवित्र माना जाता था.

प्यास से बेहाल होने पर भीमराव सबकुछ भूल गए. वे एक कुएं पर पहुंचे और उस में से पानी खींच कर पीने लगे. अभी उन की प्यास ठीक से बुझी भी नहीं थी कि उन्हें किसी के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी. शोर सुन कर भीमराव के हाथपांव फूल गए.

यह ऊंची जाति वालों का कुआं था और उसी जाति के आदमी ने उन्हें कुएं से पानी खींचते हुए देख लिया था. उस की नजर में बालटी और कुआं दोनों अपवित्र हो गए थे.

उस व्यक्ति ने चिल्लाचिल्ला कर वहां भीड़ इकट्ठी कर ली. भीमराव को ऐसा लग रहा था, जैसे भेड़ियों के झुंड ने उन्हें घेर लिया हो और सारे भेड़िए उन्हें नोंचनोंच कर खा जाने के लिए तैयार बैठे हों.

भीड़ ने भीमराव के अपराध को मापना शुरू किया, जिस से उन के अपराध की कीमत वसूली जा सके, लेकिन भीड़ ने अपराध को इतना बड़ा पाया कि उस का भुगतान ही नहीं हो सकता था.

यह जान कर भीड़ ने भीमराव को बेदर्दी से पीटना शुरू किया. वह उस बालक को बेरहमी से पीटे जा रही थी, जिस ने कुएं का पानी पीने का अपराध किया था. वह बालक निम्न जाति में पैदा होने के दंश को न केवल झेल रहा था, बल्कि दिल से महसूस भी कर रहा था.

लेकिन वह भीड़ बालक की पिटाई करने से ही संतुष्ट नहीं हुई, वह तो उस बालक को ऐसी सजा देना चाहती थी कि वह कभी अब उच्चजाति के कुएं से पानी पीने की हिम्मत न करे.

भीड़ ने फैसला किया कि बालक भीमराव का सिर मुंड़वा दिया जाए. अब ऐसे नाई की तलाश शुरू हुई

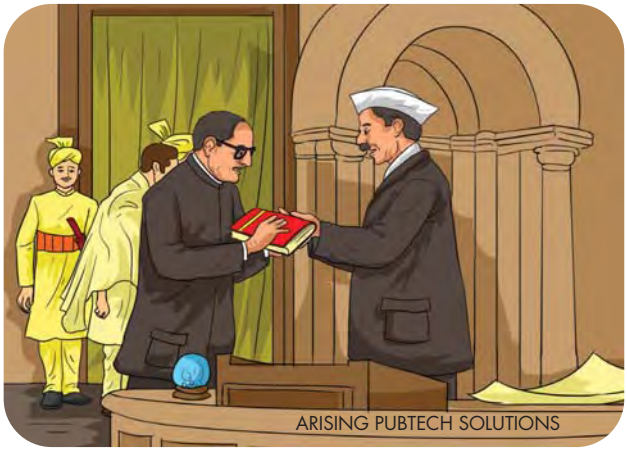

जो भीमराव के सिर के बाल उतार सके.

लेकिन उस समाज की विडंबना देखिए कि उस क्षेत्र का कोई भी नाई निम्न जाति के उस बालक के बाल काटने को तैयार नहीं हुआ. नाई को डर था कि उस के बाल काटने से उस का धंधा चौपट हो जाएगा. उस से न तो कोई हजामत बनाएगा और न ही बाल कटवाएगा.

उस समाज की विडंबना की पराकाष्ठा देखिए कि भैंस के बाल उतारने वाला नाई भी भीमराव के बाल काटने को तैयार नहीं हुआ.

इस घटना ने बालक भीमराव के जीवन पर गहरा प्रभाव डाला. उन्होंने जातिप्रथा के इस दंश से मुक्ति के लिए रास्ते खोजने शुरू कर दिए. शिक्षा ही उन्हें एकमात्र ऐसा रास्ता दिखाई दी, जो उन्हें छुआछूत और भेदभाव की बीमारी से मुक्ति दिला सकती थी.

उन्होंने अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय न्यूयौर्क से 1927 में अपने शोध कार्य 'द नैशनल डिवींडेंट औफ इंडिया, ए हिस्टोरिक ऐंड एनालायटिकल स्टडी' के लिए पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की. लंदन विश्वविद्यालय ने उन्हें 1923 में अर्थशास्त्र में प्रतिष्ठित डी.एससी. की उपाधि प्रदान की.

भीमराव अंबेडकर ने भारत के संविधान का निर्माण तो किया ही आजाद भारत के भी वे पहले कानून मंत्री भी बने. निम्न जाति के उत्थान के लिए उन्होंने कई आंदोलन चलाए, किताबें लिखीं और अखबार संपादित किए. उन के योगदान को पूरा भारतवर्ष तहेदिल से याद करता है. ●

उत्तर पृष्ठ :

पृष्ठ 9 : रास्ता बताओ :

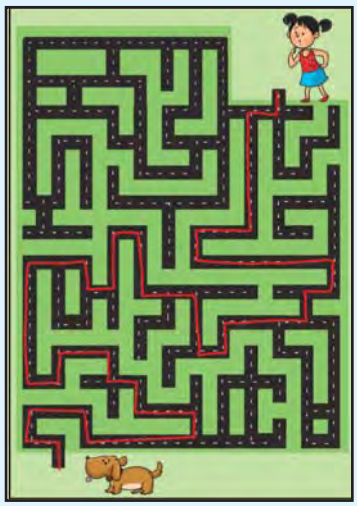

पृष्ठ 34 : गिनो और लिखो:

पृष्ठ 46 : सुलझाएं :

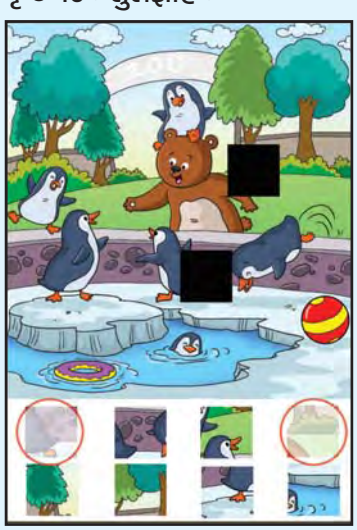

HAPPIER CHILDHOODS GUARANTEED

If you are looking for magazines that will help spark the imagination of your child, look no further! Dedicated to broadening the horizons of children aged 2-12 years, *Champak*, *Highlights Genies* and *Highlights Champs* are an essential part of your child's reading list.

India's largest read children's magazine

America's leading children's magazine in now is India!

America's leading early childhood magazine is now in India!

To subscribe : SMS 8588843436 | Call toll free no.1800 103 8880 | visit www.delhipress.in/subscribe | email subscription@delhipress.in

(REGISTERED) RNI 16420/68 DL(C)-14/1093/2018-20 WPP U(C)148/40/2018-20 P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 02 to 08 Published on 26/03/2020. Pgs. 52